खंड

3

परिशिष्ट (अध्ययन हेतु निर्धारित कवितायें)

अमीर खुसरो
विद्यापति
कबीर
जायसी
सूरदास
तुलसीदास
रहीम
मीरांबाई
बिहारी
घनानन्द
रसखान
नज़ीर अकबराबादी

खंड 3 का परिचय

यहाँ आपके पाठ्यक्रम से संबंधित कवियों की कविताएँ दी जा रही हैं। इन कविताओं में से कुछ कविताएँ आपके सत्रीय कार्य तथा सत्रांत परीक्षा के लिए निर्धारित हैं। जिन कवियों की कुछ अतिरिक्त कविताएँ दी गई हैं उनके पठन-पाठन से आप अपने अध्ययन की परिधि को विस्तारित कर सकते हैं। आपके सत्रीय कार्य तथा सत्रांत परीक्षा के लिए अमीर खुसरो, विद्यापति, घनानंद, रसखान तथा नजीर अकबराबादी की पाँच-पाँच कविताएँ; कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, रहीम मीरांबाई, बिहारी की दस-दस कविताएँ निर्धारित की गई है। इन्हीं से आपके **सत्रीय कार्य तथा सत्रांत परीक्षा में** व्याख्यात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। इनका विवरण इस प्रकार है :

अमीर खुसरो :	कव्वाली – 1
	गीत – 1
	दोहे – 1, 2, 3
विद्यापति :	1, 2, 5, 7, 8
कबीरदास :	पद – 1, 3, 5, 7
	रमैनी – 1
	साखी – 1, 5, 6, 7, 8
जायसी :	1 से 10
सूरदास :	विनय के पद – 1

	बाललीला – 1, 2, 4
	भ्रमरगीत – 1, 3, 4, 5, 6, 7
तुलसीदास :	कवितावली – 1, 2, 4, 7, 8
	रामचरितमानस – 1 से 5
रहीम :	1, 2, 4, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 14
मीरांबाई :	1 से 10
बिहारी :	1, 2, 3, 4, 8, 9, 10, 11, 12, 14
घनानंद :	1, 3, 5, 7, 10
रसखान :	सवैया – 1, 2, 4
	कवित्त – 1
	दोहा – 1, 9
नजीर अकबराबादी :	1 से 5

उपर्युक्त कविताओं को इन कवियों से संबंधित इकाइयों में कवि के 'काव्य का वाचन और आस्वादन' वाले भागों में संदर्भ सहित व्याख्या, भावार्थ आदि के माध्यम से विश्लेषित गया है। आप इन्हें पढ़कर कविताओं को समझिए तथा कविता के साथ दिए गए शब्दार्थ के सहयोग से स्वयं अपने शब्दों में व्याख्या का अभ्यास कीजिए। सत्रीय कार्य तथा सत्रांत परीक्षा में कविताओं की सप्रसंग व्याख्या अपेक्षित होती है। आप अपना उत्तर लिखते हुए कविताओं के संदर्भ, उनकी व्याख्या तथा विशेष' के रूप में व्याख्या के लिए दी गई कविताओं की खास संवेदनागत अथवा शिल्पगत विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।

अमीर खुसरो

कव्वाली

छाप[1]-तिलक तज दीन्ही[2] रे, तोसे नैना[3] मिला के।
प्रेम बटी[4] का मदवा[5] पिलाके
मतवारी[6] कर दीन्ही रे, मोसे नैना मिला के।
खुसरो निज़ाम पै बलि[7]-बलि जइए,
मोहे सुहागन[8] कीन्ही रे, मोसे नैना मिला के।

गीत

काहे[9] को ब्याही बिदेस[10] रे,
लखि[11] बाबुल मोरे!
हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल
कुहुकत[12] घर-घर जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़िया,
चुग्गा[13] चुगत[14] उड़ि जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे बेले[15] की कलियाँ,
जो मांगे चली जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे खूंटे[16] की गइया,
जित हांको[17] हंक जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
लाख की बाबुल गुड़िया जो छाड़ी,
छोड़ि सहेलिन का साथ, लखि बाबुल मोरे।
महल तले[18] से डोलिया जो निकली,

1. धार्मिक प्रतीकों के चिह्न जिन्हें वैष्णव लगाते हैं। 2. त्याग देना (तज दीन्ही) 3. आँखें 4. जड़ी-बूटी 5. रस, मदिरा 6. मतवाली 7. बलिहारी 8. सौभाग्यवती, विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित हो 9. क्यों 10. परदेश 11. देखो 12. कोयल की आवाज 13. दाना 14. खाना 15. लताएँ 16. लकड़ी का खूँटा जिसमें गाय आदि जानवर बाँधे जाते हैं 17. गाय आदि जानवरों को चलाना 18. नीचे

भाई ने खाई पछाड़, लखि बाबुल मोरे।
आम तले से डोलिया जो निकली,
कोयल ने की है पुकार, लखि बाबुल मोरे।
तू क्यों रोवे है, हमरी कोइलिया,
हम तो चले परदेष, लखि बाबुल मोरे।
नंगे पाँव बाबुल भागत[19] आवै,
साजन डोला लिए जाय, लखि बाबुल मोरे।।1।।

बहुत कठिन है डगर[20] पनघट[21] की
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा[22] से मटकी।
मोरे अच्छे निज़ाम पिया –
कैसे मैं भर लाऊं मधवा से मटकी
जरा बोलो निज़ाम पिया,
पनिया भरन को मैं जो गई थी –
दौड़ झपट मोरी मटकी-पटकी। बहुत कठिन है –
खुसरो निज़ाम के बलि-बलि जाइये
लाज राखे मोरे घूंघट[23] पट[24] की – ।।3।।

पहेलियाँ

बाला[25] था जब सबको भाया[26]। बढ़ा हुआ कछु काम न आया।।
खुसरू कह दिया उसका नाँव[27]। अर्थ करो नहिं छोड़ो गाँव।।1।।

दीया

सावन भादों बहुत चलत है माघ पूस में थोरी।
अमीर खुसरों यो कहे तू बूझ पहेली मोरी।।2।।

मोरी

19. भागकर, दौड़कर 20. रास्ता 21. पानी भरने का घाट 22. मधु, शहद 23. साड़ी का किनारा जिससे स्त्री चेहरा (मुँह) ढ़क लेती है 24. पर्दा, आड़ 25. छोटा 26. अच्छा लगा 27. नाम

एक नार पिया को भानी। तन वाको सगरा[28] जों पानी।।
आब[29] रखे पर पानी नाँह। पिया को राखे हिर्दय माँह।।
जब पी को वह मुख दिखलावे। आपहि सगरी पी हो जावे।।3।।

दर्पण

एक थाल मोती से भरा। सबके सिर पर औंधा धरा।।
चारों ओर वह थाली फिरे। मोती उससे एक न गिरे।।4।।

आकाश

एक नार ने अचरज किया। सांप मार पिंजरे में दिया।।
जों जों सांप ताल को खाए। ताल सूख सांप मर जाए।।5।।

दीया बत्ती

आदि कटे सो सब को पाले। मध्य कटे से सब को मारे।।
अंत कटे से सबको मीठ। खुसरू वाको[30] आँखों दीठा[31]।।6।।

काजल

कह मुकरियाँ

बरसा बरस वह देस में आवे। मुँह से मुँह लगा रस प्यावे।।
वा खातिर में खरचे दाम। ऐ सखी साजन ना सखी आम।।1।।

आँख चलावे भौं मटकावे। नाच कूद के खेल खिलावे।
मन में आवे ले जाऊँ अंदर। ऐ सखी साजन ना सखी बंदर।।2।।

नित मेरे घर वह आवत है। रात गए फिर वह जावत है।।
फँसत अमावस गोरि के फंदा। ऐ सखी साजन ना सखी चंदा।।3।।

एक सजन वह गहरा प्यारा। जा से घर मेरा उजियारा।।
भोर भई तब बिदा मैं किया। ऐ सखी साजन ना सखी दिया।।4।।

---

28. सब, समस्त 29. चमक, कांति 30. उसको 31. दीखना

दोहे

गोरी[32] सोवे सेज[33] पर मुख पर डारे केस[34],
चल खुसरो घर आपने रैन[35] भई चहुँ देष।।1।।

खुसरो रैन सोहाग की, जागी पी[36] के संग।
तन मेरो मन पीऊ[37] को दोऊ भए एक रंग ।।2।।

देख मैं अपने हाल[38] को रोऊं, जार-ओ-जार।
वे गुनवन्ता[39] बहुत है, हम हैं औगुन[40] हार ।।3।।

चकवा चकवी[41] दो जने इन[42] मारे न कोय।
ईह मारे करतार[43] कै रैन बिछोही होय ।।4।।

सेज सूनी देख के रोऊं दिन-रैन।
पिया पिया कहती मैं पल भर सुख न चैन ।।5।।

32. गौर वर्ण वाली 33. पलंग, कब्र 34. बाल 35. रात 36. प्रियतम (ब्रह्म) 37. प्रियतम, पति 38. दशा, अवस्था 39. गुणवान 40. अवगुण 41. नर एवं मादा सुरखाब पक्षी 42. यह 43. विद्याता

विद्यापति

पदावली

नन्दक नन्दन[1] कदम्बक तरु[2]-तर[3]

धिरे धिरे मुरलि बजाव।

समय संकेत निकेतन[4] बइसल

बेरि बेरि बोलि पठाव[5]।।

सामरि[6] तोरा[7] लागि।

अनुखन[8] विकल मुरारि।।

जमुनाक तिर[9] उपवन उदवेगल[10]

फिरि फिरि ततहि[11] निहारि[12]।

गोरस[13] बेचए अबइत जाइत[14]

जनि जनि पुछ बनमारि[15]।।

तोहे मतिमान[16], सुमति[17] मधुसूदन

बचन सुनह किछु मोरा।

भनइ[18] विद्यापति सुन बरजौवति[19]

बन्दह नन्द किषोरा।।1।।

देख देख राधा रूप अपार।

अपुरुब[20] के बिहि[21] आनि मिलाओल[22]

खिति-तल[23] लावनि सार।।

अंगहि अंग अनंग[24] मुरछायत[25]

---

1. नंद के बेटे अर्थात श्री कृष्ण (नन्दक नन्दन) 2. पेड़ 3. तले, नीचे 4. मिलन-स्थल (संकेत निकेतन) 5. भेज रहे हैं 6. श्यामा, साँवली आकर्षक स्त्री 7. तुम्हारे 8. प्रतिक्षण 9. किनारे 10. उद्विग्न, बेचैन 11. उसी ओर 12. देखकर 13. दूध, दही 14. आती-जाती 15. वनमाली, कृष्ण 16. बुद्धिमान 17. बुद्धिमति 18. कहते हैं 19. श्रेष्ठ स्त्री 20. अपूर्व 21. ब्रह्मा, विधाता 22. मिलाना 23. पृथ्वी पर, क्षिति पर 24. कामदेव 25. मूर्छा आना

हेरए [26] पड़ए अथीर[27]।

मनमथ[28] कोटि-मथन करु जे जन

से हेरि महि-मधि[29] गीर।।

कत कत लखिमी[30] चरन-तल नेओछए [31]

रंगिनि[32] हेरि बिभोरि[33]।

करु अभिलाख मनहि पद पंकज

अहोनिसि[34] कोर अगोरि[35]।।2।।

माधव की कहब सुन्दरि रुपे।

कतेक जतन विहि[36] आनि समारल

देखल नयन सरुपे।।

पल्लव-राज[37] चरन-युग सोभित

गति गजराजक[38] भाने[39]।

कनक-कदलि[40] पर सिंह समारल

तापर मेरु[41] समाने।।

मेरु ऊपर दुह कमल फुलाएल

नाल[42] बिना रुचि पाई।

मनि-मय [43] हार धार बहु सुरसरि[44]

तओ नहि कमल सुखाई।।

अधर[45] बिम्ब सन, दसन[46] दाड़िम-विजु[47]

---

26. ढूँढना 27. चंचल 28. कामदेव 29. पृथ्वी पर 30. लक्ष्मी 31. न्योछावर होती है 32. सुंदरी 33. बेसुध होकर 34. दिन-रात 35. पहरा दे कर रखना 36. ब्रह्मा 37. कमल 38. हाथी के 39. समान 40 सोने के केले का थंब 41. पहाड़ 42. डंडी 43. मणियों की माला जैसी 44. गंगा 45. ओष्ट 46. दाँत 47. अनार का बीज

रवि ससि उगथिक पासे।
राहु दूर बस निएरे[48] न आबथि
तैं नहि करथि गरासे।।

सारँग[49] नयन बयन पुनि सारँग[50]
सारँग[51] तसु समधाने।
सारँग[52] ऊपर उगल दस सारँग[53]
केलि करथि मधुपाने।।

भनइ विद्यापति सुन बर जौबति
एहन[54] जगत नहि आने[55]।
राजा सिवसिंघ रुप नारायण
लखिमा देइ पति भाने।।3।।

सुधामुखि के बिहि निरमलि[56] बाला।
अपरुब रूप मनोभवमंगल[57]
त्रिभुवन विजयी माला।।

सुन्दर बदन[58] चारु अरु लोचन[59]
काजर-रंजित[60] भेला।
कनक-कमल माझे काल भुजंगिनि
श्रीयुत खंजन खेला।।

नाभि बिबर[61] सएं लोम-लतावलि
भुजगि[62] निसास[63]-पियासा

48. निकट 49. हरिण 50. कोयल 51. कामदेव 52. कमल (ललाट) 53. भौंरा (केश के गुच्छे) 54. ऐसा 55. दूसरा, अन्य 56. निर्माण किया 57. कामदेव का स्वरूप 58. मुखड़ा 59. आँख 60. काजल लगा हुआ 61. छेद 62. सर्पिणी 63. साँस

नासा खगपति[64]-चंचु भरम-मय
कुच-गिरि-संधि निवासा।।

तिन बान मदन तेजल[65] तिन भुवने
अवधि रहल दुइ बाने।
बिधि बड़ दारुन बधए रसिकजन
सोंपल तोहर नयाने।।

भनइ विद्यापति सुन बर जौबति
इह रस केओ पए जाने।
राजा सिवसिंघ रुपनरायन
लखिमा देइ रमाने।।4।।

ससन[66]-परस[67] खसु[68] अम्बर[69] रे
देखल धनि देह।
नव जलधर[70]-तर चमकए रे
जनि बिजुरी-रेह[71]।।

आज देखल धनि जाइत रे
मोहि उपजल रंग[72]।
कनक-लता जनि संचर[73] रे
महि निर अवलम्ब।।

ता पुन अपरुब देखल रे
कुच-जुग अरविन्द[74]।
बिगसित[75] नहि किछु कारन रे

64. गरुड़ 65. छोड़ा 66. श्वसन पवन 67. स्पर्श 68. गिर पड़ा 69. कपड़ा, आँचल 70. बादल 71. रेखा 72. प्रतीत हुआ (उपजल रंग) 73. चलना 74. कमल 75. खिला हुआ

सोझाँ [76] मुख – चन्द।।

विद्यापति कवि गाओल रे
रस बूझ रसमन्त।
देवसिंह नृप नागर रे
हासिनि देइ कन्त।।5।।

लोटाए [77] धरनि[78], उठए धरि सोई[79]।
खने खन[80] साँस खने खन रोई।।
खने खन मुरछइ कंठ परान।
इथि[81] पर की गति दैव से जान।।
हे हरि पेखलिहुँ [82] से बर नारि।
न जिउति[83] बिनु कर-परसें[84] तोहारि।।
केओ केओ जपए बेद दिठि[85] जानि।
केओ नब ग्रह पुज जोतिअ[86] आनि।।
केओ केओ कर धरि धातु[87] बिचार।
बिरह-बिखिन[88] कोइ लखए न पार।।6।।

माधब, तोहें जनु जाह[89] बिदेस।
हमरो रंग रभस[90] लए जएबह
लएबअ कओन सँदेस[91]।।
बनहि गमन करु होइति दोसरि मति।
बिसरि जाएब पति मोरा।
हीरा मनि मानिक एको नहि माँगब

76. सामने 77. लोटना 78. पृथ्वी (जमीन) 79. वह 80. क्षण, पल 81. इसके 82. (मैंने) देखा 83. जीएगी 84. हाथ का स्पर्श 85. नजर लगना 86. ज्योतिषी 87. नाड़ी 88. विरह से क्षीण हुई 89. मात जाओ (जनुजाह) 90. आमोद-प्रमोद (रंग रभस) 91. सौगात

फेरि माँगब पहु[92] तोरा।।
जखन[93] गमन करु नयन नीर[94] भरु
देखहु न भेल पहुओरा[95]।
एकहि नगर बसि पहु भेल परबस
कइसे पुरत[96] मन मोरा।।
पहु सँग कामिनि[97] बहुत सोहागिनि
चन्द्र निकट जइसे तारा।
भनइ विद्यापति सुनु बर जौबति
अपन हदय धरु सारा[98]।।7।।

के[99] पतिआ[100] लए जाएत रे
मोरा पियतम पास।
हिय [101] नहि सहए असह दुख रे
भेल साओन[102] मास।।
एकसरि[103] भवन पिया बिनु रे
मोरा रहलो न जाय।
सखि अनकर[104] दुख दारुन[105] रे
जग के पतिआय [106]।।
मोर मन हरि[107] हरि[108] लए गेल रे
अपनो मन गेल
गोकुल तजि मधुपुर बस रे
कत अपजस[109] लेल।।
विद्यापति कबि गाओल रे

92. प्रिया 93. जिस क्षण 94. आँसू 95. प्रियतम की ओर 96. पूरा होना 97. स्त्रियाँ 98. धैर्य 99. कौन 100. पत्र 101. हृदय 102. सावन 103. अकेली 104. दूसरे का 105. तीव्र 106. विश्वास करता है 107. कृष्ण 108. हरण (करना) 109. अपयश

धनि धरु मन आस
आओत तोर मनभावन रे
एहि कातिक मास।।8।।

मोरा रे आँगना चानन[110] केरि गछिआ[111]
ताहि चढ़ि कुररए [112] काग रे।

सोने चोंच बाँधि देब तोहि बायस[113]
जओ पिया आओत आज।।
गाबह सखि सब झूमर लोरी
मयन-अराधए [114] जाऊँ रे।
चहुदिस चम्पा मउली[115] फूललि
चान इजोरिया[116] राति रे।
कइसे कए हमे मयन अराधब
होइति बड़ि रति-साति[117] रे।।
विद्यापति कबि गाबए तोहर
पहु अछ[118] गुनक निधान रे।
राओ भोगीसर सब गुन आगर
पदमा देइ रमान[119] रे।।9।।

110. चंदन 111. वृक्ष 112. बोल रहा है 113. काग 114. कामदेव की अराधना करने 115. मल्लिका पुष्प 116. चाँदनी 117. रति जनित पीड़ा 118. हैं 119. पति

कबीरदास

'पद'

दुलहिनीं[1] गावहु मंगलचार[2]।

हंम घरि आए राजा रांम भरतार[3]।।टेक।।

तन[4] रत[5] करि मैं मन रति करिहौं पांचउ तत्त[6] बराती।

रांम देव मोरै पाहुनैं[7] आए मैं जोबन[8] मैंमाती[9]।।

सरीर सरोबर[10] बेदी[11] करिहौं ब्रह्मा बेद उचारा[12]।

रांम देव संगि भांवरि[13] लेहंहौं[14] धंनि धंनि भाग हमारा।।1।।

हरि मोरा पिउ[15] मैं हरि की बहुरिया[16]।

रांम बड़े मैं तनक[17] लहुरिया[18]।।

किएउं सिंगारु मिलन कै तांई। हरि न मिले जग जीवन गुसांई[19]।।

धनि[20] पिउ एकै संगि बसेरा। सेज एक पै मिलन दुहेरा[21]।।2।।

हरि जननी[22] मैं बालक तेरा।

काहे न अवगुन[23] बकसहु[24] मेरा।।टेक।।

सुत[25] अपराध करत है केते। जननी कै चित[26] रहैं न तेते।।

कर[27] गहि[28] केस करै जौ घाता[29]। तऊ न हेत[30] उतारै[31] माता।।

कहै कबीर इक बुद्धि बिचारी। बालक दुखी दुखी महतारी।।3।।

संतो भाई आई ग्यांन की आंधी रे।

भ्रम की टाटी[32] सभै उड़ांनीं माया रहै न बांधी रे।।टेक।।

---

1. विवाहित स्त्री, सुहागिन 2. शुभ गीत, मांगलिक गीत 3. पति 4. शरीर 5. अनुरक्त 6. पाँच तत्व (क्षितिज, जल, अग्नि, गगन, वायु) 7. अतिथि 8. यौवन 9. मदमत्त 10. तालाब 11. वेदी (पूजा की) 12. उच्चारण करना, पढ़ना 13. परिक्रमा (विवाह की) 14. लूँगी 15. पति 16. पत्नी 17. तनिक, थोड़ी 18. छोटी 19. भगवान, ईश्वर 20. स्त्री, पत्नी 21. कठिन 22. माता 23. दोष, अवगुण 24. क्षमा करना 25. पुत्र 26. अंतःकरण, मन 27. हाथ 28. पकड़कर 29. चोट पहुँचाना 30. स्नेह 31. वंचित करना, कम करना 32. छप्पर

दुचिते[33] की दोइ थूंनि[34] गिरांनीं मोह बलेंडा[35] टूटा।

त्रिसनां छांनि[36] परी घर ऊपरि दुरमति[37] भांडा[38] फूटा।।

आंधी पाछैं[39] जो जल बरसै तिहिं तेरा जन[40] भींना[41]।

कहै कबीर मनि भया प्रगासा उदै[42] भानु[43] जब चीनां[44] (– न्हां?)।।4।।

हंम न मरैं मरिहै संसारा।

हंमकौं मिला जिआवनहारा[45]।।टेक।।

साकत[46] मरहिं संत जन जीवहिं। भरि भरि रांम रसांइन पीवहिं।।

हरि मरिहै तौ हंमहूं मरिहैं। हरि न मरै हंम काहे कौ मरिहैं।।

कहै कबीर मन मनहिं मिलावा। अमर भए सुखसागर[47] पावा।।5।।

माया महा ठगिनि[48] हम जांनीं।

तिरगुन[49] फांसि[50] लिए कर डोलै बोलै मधुरी बांनीं।।टेक।।

केसव[51] कै कंवला[52] होइ बैठी सिव कै भवन भवांनीं[53]।

पंडा कै मूरति होइ बैठी तीरथ हू मैं पांनीं[54]।।

जोगी कै जोगिनि होई बैठी राजा कै घरि रांनीं।

काहू कै हीरा होइ बैठी काहू कै कौड़ी कांनीं।।

भगतां[55] कै भगतिनि होइ बैठी तुरकां[56] के तुरकांनीं।।6।।

झीनी[57] झीनी बीनी चदरिया।।

काह के ताना[58] काह के भरनी[59], कौन तार से बीनी चदरिया।

इँगला[60] पिंगला[61] ताना भरनी, सुषमन[62] तार से बीनी चदरिया।।

---

33. चित्त की दो अवस्था 34. खंभा 35. बल्ली, बड़ेर 36. छप्पर 37. दुर्बुद्धि, कुबुद्धि 38. बरतन 39. पीछे, बाद 40. भक्त (तेरा जन=प्रभु का आदमी) 41. भींगना 42. उदय 43. सूर्य 44. पहचानना 45. जिलाने वाला (अमरत्व प्रदान करने वाला) 46. शाक्त (शक्ति के उपासक) 47. सुख का सागर अर्थात परम आनंद 48. ठगने वाली, भम्र उत्पन्न करने वाली 49. त्रिगुणात्मक अर्थात सत्, रज और तम गुणों से युक्त 50. फाँस, बधन 51. विष्णु 52. लक्ष्मी 53. पार्वती 54. जल 55. भक्त (साधु) 56. तुर्क (यहाँ तात्पर्य मुल्ला से है) 57. बहुत बारीक, जर्जर 58. करघे में लंबाई में फैलाया गया सूत 59. करघे की ढरकी 60. इड़ा – मेरूदंड में बाईं ओर की नाड़ियाँ (हठयोग में तीन नाड़ियाँ हैं– इड़ा, पिंगला और सुषम्ना) 61. मेरूदंड में दाहिनी ओर की नाड़ियाँ 62. इड़ा और पिंगला के बीच की नाड़ियों में से एक जो नासिका के मध्यभाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित है

आठ कमल दल[63] चरखा डोलै, पाँच तत्त्व गुण तीनी[64] चदरिया।
साईं[65] को सियत मास दष लागे, ठोक ठोक के बीनी चदरिया।।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़िन, ओढ़ि के मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर यतन[66] से ओढ़िन, ज्योंका त्यों धरि दीनी चदरिया।।7।।

रमैनी

तब नहिं होते[67] पवन[68] न पांनीं। तब नहिं होती सिस्टि[69] उपांनीं[70]।।
तब नहिं होते पिंड[71] न बासा[72]। तब नहिं होते धरनि[73] अकासा।।
तब नहिं होते गरभ[74] न मूला[75]। तब नहिं होते कली न फूला।।
तब नहिं होते सबद[76] न स्वादा। तब नहिं होते विद्या न बेदा।।
तब नहिं होते गुरू न चेला। गंम[77] अगम[78] यहु पंथ अकेला।।
अबिगति[79] की गति क्या कहूं, जिस कर गांउ[80] न ठांउ[81]।
गुन बिहून[82] का पेखिए [83], का कहि धरिए नांउ[84]।।1।।
अलख[85] निरंजन[86] लखै[87] न कोई। जेहि बंधे[88] बंधा सब लोई[89]।।
जेहि झूठे बंधायौ आंनां[90]। झूठी बात सांच कै जांनां।।
धंध बंध कीन्हें बहुतेरा। करम बिबरजित[91] रहै न नेरा।।
खट आस्रम[92] खट दरसन[93] कीन्हां। खट रस[94] बांटि करम संगि दीन्हां।
चार वेद छ सास्त्र[95] बखांनैं। विद्या अनंत कथै को जांनैं।।
तप तीरथ कीन्हें ब्रत पूजा। धरम नेम दांन पुनि दूजा।।
और अगम कीन्हें बेवहार। नहिं गमि सूझै वार न पारा।।

---

63. अष्ट कमल दल 64. त्रिगुणात्मक (गुण तीनी) 65. ईश्वर 66. सलीका 67. था, होना 68. हवा 69. सृष्टि 70. उत्पन्न होना, उत्पत्ति 71. देह, शरीर 72. घर 73. पृथ्वी 74. गर्भ 75. जड़ 76. शब्द, वाणी 77. जहाँ पहुँचा जा सके 78. न चलने वाला, पहुँच से परे 79. अज्ञात, बुद्धि की पहुँच से परे 80. गाँव 81. स्थान 82. रहित 83. देखिए 84. नाम 85. दिखाई न देने वाला 86. माया रहित 87. देखना 88. बंधन, फंदा 89. लोग 90. अज्ञानी 91. मना किया हुआ 92. छह आश्रम (ब्राह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास, हंस तथा परमहंस) 93. छह दर्शन (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा तथा वेदांत) 94. छह रस (मधुर, तिक्त, लवण, कटु, अम्ल, काषाय) 95. छह शास्त्र (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंह, ज्योतिष)

माया मोह धन जोबनां[96], इनि बंधे सब लोइ।

झूठै झूठ बियापिया[97] कबीर, अलख न लखई कोइ।।2।।

साखी

ग्यांन प्रकासी[98] गुर मिला, सो जनि बीसरि[99] जाइ।

जब गोबिंद क्रिपा करी, तब गुर मिलिया आइ।।1।।

यहु तनु[100] जारौं मसि करो, ज्यूं धूवां जाइ सरग्गि[101]

मति[102] वै रांम दया करै, बरसि बुझावै अग्गि।।2।।

अंखियन तौ झांई[103] परी, पंथ[104] निहारि निहारि।

जिभ्या[105] मैं छाला परा, राम पुकारि पुकारि।।3।।

बिरह की ओदी[106] लाकड़ी, सपचै[107] औ धुंधुवाइ[108]।

छूटि पड़ै या बिरह तैं, जौ सगली[109] जरि जाइ।।4।।

संत न छांड़ै संतई, जौ कोटिक[110] मिलहिं असंत।

मलय [111] भुयंगम[112] बेढ़िऔ[113], तऊ सीतलता न तजंत।।5।।

कबीर कूता रांम का, मुतिया मेरा नांउं।

गले रांम की जेवरी[114], जित खैंचै तित जाउं।।6।।

पारब्रह्म[115] के तेज[116] का, कैसा है उनमांन[117]।

कहिबे कौ सोभा नहीं, देखें ही परवांन[118]।।7।।

हिंदू मूआ रांम कहि, मूसलमांन खुदाइ।

कहै कबीर सो जीवता, जो दुहुं[119] कै निकटि न जाइ।।8।।

---

96. यौवन 97. व्याप्त है 98. प्रकाशित करने वाला, प्रकाश देने वाला 99. भूलना 100. शरीर 101. स्वर्ग 102. संभवतः 103. अँधेरा, आँखों की रोशनी का मंद पड़ना 104. रास्ता 105. जिह्वा 106. गीली 107. धीरे–धीरे 108. धुआँ के साथ जलना 109. सारा, संपूर्ण 110. करोड़ 111. मलय पर्वत जिस पर चंदन के वृक्ष हैं (इस साखी में 'चंदन' के अर्थ में प्रयुक्त) 112. साँप 113. लिपटे हुए 114. रस्सी 115. परम ब्रह्म 116. प्रकाश 117. अनुमान 118. प्रमाण 119. दोनों

मलिक मुहम्मद जायसी

'पदमावत' सिंहल द्वीप-वर्णन खंड से

सिंघल दीप कथा अब गावौं[1]। औ सो पदुमिनि बरनि[2] सुनावौं।।

बरन क[3] दरपन[4] भाँति बिसेखा[5]। जेहि[6] जस रूप सो तैसेइ[7] देखा।।

धनि[8] सो दीप जहँ दीपक नारी। औ सो पदुमिनि दइअ[9] अवतारी।।

सात दीप बरनहिँ सब लोगू। एकौ दीप न ओहि[10] सरि[11] जोगू[12]।।

दिया दीप नहिँ तस[13] उजियारा[14]। सराँ दीप सरि होइ न पारा।।

जंबू दीप कहौं तस नाहीं। पूज[15] न लंक दीप परिछाहीं।।

दीप कुसस्थल आरन[16] परा। दीप महुस्थल मानुस हरा[17]।।

सब संसार परथमैं आए सातौं दीप।
एकौ दीप न उत्तिम सिंघल दीप समीप।।1।।

गंध्रपसेन[18] सुगंध[19] नरेसू। सो राजा यह ताकर[20] देसू।।

लंका सुना जो रावन राजू[21]। तेहु चाहि[22] बड़ जाकर साजू[23]।।

छप्पन कोटि[24] कटक[25] दर[26] साजा। सबै छत्रपति ओरँगन्ह[27] राजा।।

सोरह सहस[28] घोर[29] घोरसारा[30]। सावँकरन[31] बालका[32] तुखारा[33]।।

सात सहस हस्ती सिंघली। जिमि[34] कबिलास[35] एरापति बली।।

---

1. कह रहा हूँ 2. वर्णन 3. की 4. दर्पण 5. विशेषता 6. जिसका 7. वैसा ही 8. धन्य 9. कराया 10. उसके 11. तुलना 12. योग्य 13. वैसा 14. उजाला, प्रकाश 15. बराबरी करना 16. जंगल 17. हर लेता है 18. गंधर्वसेन 19. जिसका यश चारों ओर सुगंध की तरह फैला हुआ है 20. उसका 21. राज 22. अपेक्षा 23. साज-सज्जा 24. करोड़ 25. सेना 26. दरवाजा 27. सिंहासन 28. सहस्त्र, हजार 29. घोड़ा 30. घुड़साल 31. श्यामकर्ण नस्ल 32. वंशज 33. तुषार देश का 34. जैसा, समान 35. स्वर्ग

असुपती[36] क सिरमौर कहावा। गजपती क आँकुस गज नावा[37]।।

नरपती क कहाव नरिंदू[30]। भुअपती के जग दोसर[39] इंदू[40]।।

अइस चक्कवै[41] राजा चहूँ खंड मै होइ।

सबै आइ सिर नावहिं सरबरि[42] करै न कोइ।।2।।

जबहि दीप निअरावा[43] जाई। जनु कबिलास निअर भा आई।।

घन अँबराउँ [44] लाग[45] चहुँ पासा। उठै पुहुमि[46] हुति लाग अकासा।।

तरिवर[47] सबै मलै गिरि[48] लाए। भै जग[49] छाँह[50] रैनि[51] होइ छाए।।

मलै समीर सोहाई छाहाँ। जेठ जाड़ लागै तेहि माहाँ [52]।।

ओही छाँह रैनि होइ आवै। हरिअर सबै अकास दिखावै।।

पंथिक जौं पहुँचै सहि घामू[53]। दुख बिसरै[54] सुख होइ बिसरामू।।

जिन्ह वह पाई छाँह अनूपा[55]। बहुरि[56] न आइ सही यह धूपा।।

अस अँबराउँ सघन घन बरनि न पारौं अंत।

फूलै फरै[57] छहूँ रितु जानहु सदा बसंत।।3।।

फरे आँब[58] अति सघन सुहाए। औ जस फरे अधिक सिर नाए [59]।।

कटहर डार पींड[60] सों पाके। बड़हर सोउ अनूप अति ताके[61]।।

खिरनी पाकि खाँड[62] असि मीठी। जाँबु[63] जो पाकि भँवर असि डीठी[64]।।

---

36. अश्वपतियों के 37. झुकाना 38. नरेंद्र 39. दूसरा 40. इंद्र 41. चक्रवर्ती 42. बराबरी 43. नजदीक 44. आम का बगीचा 45. लगा हुआ 46. धरती, पृथ्वी 47. वृक्ष 48. मलयगिरि 49. संसार 50. छाया 51. रात 52. महीना 53. धूप 54. भूलना 55. अनोखा 56. पुनः 57. फलना 58. आम 59. झुकना 60. तना 61. उसके 62. गुड़ 63. जामुन 64. नजर आना, दीखना

नरिअर फरे फरी खुरहुरी। फुरी जानु इन्द्रासन[65] पुरी[66]।।

पुनि महु[67] चुवै[68] सो अधिक मिठासू। मधु जस मीठ पुहुप[69] जस बासू।।

और खजहजा[70] आव[71] न नाऊँ [72]। देखा सब रावन अँबराऊँ।।

लाग सबै जस अंब्रित[73] साखा। रहै लोभाइ सोइ जोइ चाखा।।

गुआ सुपारी जायफर सब फर फरे अपूरि[74]।

आस पास घनि इँबिली औ घन तार खजूरि।।4।।

बसहिं पंखि[75] बोलहिं बहु भाषा। करहिं हुलास[76] देखि कै साखा[77]।।

भोर होत बासहिं[78] चुहचुही[79]। बोलहिं पाँडुक एकै तुही।।

सारौ[80] सुवा सो रहचह करहीं। गिरहिं परेवा औ करबरहीं।।

पिउ पिउ लागै करैं पपीहा। तुही तुही कह गुडुरू खीहा[81]।।

कुहू कुहू कोइल करि राखा। औ भिंगराज[82] बोल बहु भाषा।।

दही दही कै महरि[83] पुकारा। हारिल बिनवै[84] आपनि हारा[85]।।

कुहकहिं मोर सोहावन लागा। होइ कोराहर बोलहिं कागा।।

जावँत[86] पंखि कहे सब बैठे भरि अँबराउँ।

आपनि आपनि भाषा लेहिं दइअ[87] कर नाउँ।।5।।

पैग[88] पैग पर कुआँ बावरी[89]। साजी[90] बैठक औ पाँवरी[91]।।

---

65. स्वर्ग 66. पवित्र नगरी 67. महुआ 68. टपकना 69. पुष्प 70. मेवा 71. आना, जानना 72. नाम 73. अमृत 74. भरपूर 75. पक्षी 76. आनंद, उल्लास 77. डाली 78. सुगंध लेना 79. फुलसुँघनी 80. मैना 81. खीझना 82. भुजंगा 83. ग्वालिन 84. निवेदित करना, बोलना 85. हाल 86. जितने 87. देव, ईश्वर 88. कदम, पग 89. तालाब 90. बनी थी 91 सीढ़ी

औरु कुड[92] बहु ठाँवहिँ ठाँऊ[93]। सब तीरथ औ तिन्हके[94] नाऊँ।।

मढ़[95] मंडप चहुँ पास सँवारे[96]। जपा तपा सब आसन मारे।।

कोइ रिखेस्वर[97] कोइ सन्यासी। कोइ रामजन कोइ मसवासी[98]।।

कोइ ब्रह्मचर्ज पँथ लागे। कोइ दिगम्बर आछहिं[99] नाँगे।।

कोइ सरसुती सिद्ध कोइ जोगी। कोइ निरास पँथ बैठ बियोगी।।

कोइ महेसुर[100] जंगम[101] जती। कोइ एक परखै देबी सती।।

सेवरा[102] खेवरा[103] बानपरस्ती सिध[104] साधक अवधूत[105]।

आसन मारि बैठ सब जारि[106] आतमा भूत।।6।।

मानसरोदक[107] देखिअ काहा[108]। भरा समुँद अस अति अवगाहा[109]।।

पानि मोति अस निरमर[110] तासू। अंब्रित बानि कपूर सुबासू।।

लंक दीप कै सिला[111] अनाई[112]। बाँधा सरवर[113] घाट बनाई।।

खँड खँड सीढ़ी भई गरेरी[114]। उतरहिं चढ़हिं लोग चहुँ फेरी।।

फूला कँवल रहा होइ राता[115]। सहस सहस पँखुरिन्ह कर छाता।।

उलथहिं[116] सीप मोति उतिराहीं[117]। चुगहिं हंस औ केलि[118] कराहीं।।

कनक पंखि[119] पैरहिं[120] अति लोने[121]। जानहु चित्र सँवारे सोने।।

ऊपर पाल[122] चहूँ दिसि अँब्रित फर सब रूख[123]।

---

92. कुंड 93. स्थान 94. उनके 95. मठ 96. सुशोभित 97. श्रेष्ठ ऋषि 98. महीने भर उपवास रखने वाला 99. होना 100. महेश्वर 101. शैवों के एक समुदाय में गुरु की उपाधि 102. श्वेतांबर (जैन) 103. जैन मुनि 104. सिद्ध 105. साधुओं का एक भेद 106. जलाना 107. मानसरोवर 108. क्या (कैसा सुंदर) 109. अगाध 110. निर्मल 111. पत्थर 112. मँगाना 113. तालाब, सरोवर 114. घुमावदार 115. सुंदर 116. उलटना 117. पानी के उपर तैरना, उतराना 118. क्रीड़ा 119. सुनहले पक्षी 120. तैरते हुए 121. सुंदर 122. फलों को गरमी पहँचाकर पकाने के लिए पत्ते बिछाकर रखने की विधि 123. वृक्ष, पेड़

देखि रूप सरवर कर गइ पिआस औ भूख।।7।।

पानि भरइ आवहिं पनिहारीं। रूप सुरूप[124] पदुमिनी नारीं।।

पदुम[125] गंध तेन्ह अंग बसाहीं। भँवर[126] लागि तेन्ह संग फिराहीं[127]।।

लंक[128] सिंघिनी सारँग[129] नैनी। हँसगामिनी कोकिल बैनी[130]।।

आँवहिं झुंड सो पाँतिहि पाँती। गवन[131] सोहाइ[132] सो भाँतिहि भाँती।।

केस मेघावरि[133] सिर ता पाई[134]। चमकहिं दसन[135] बीजु[136] की नाई।।

कनक कलस मुख चंद दिपाहीं[137]। रहस[138] कोड[139] सो आवहिं जाहीं।।

जासौं वै हेरहिं[140] चख[141] नारी। बाँक[142] नैन जनु हनहिं[143] कटारी।।

मानहु मैन मुरति[144] सब अछरीं[145] बरन अनूप।

जेन्हिकी ये पनिहारी सो रानी केहि रूप।।8।।

ताल[146] तलावरि[147] बरनि न जाहीं। सूझइ वार पार तेन्ह नाहीं।।

फूले कुमुद केत[148] उजिआरे। जानहुँ उए [149] गगन महँ तारे।।

उतरहिं मेघ चढहिं लै पानी। चमकहिं मंछ[150] बीजु की बानी।।

पैरहिं पंखि सो संगहि संगा। सेत[151] पीत[152] राते[153] बहु रंगा।।

चकई चकवा केलि कराहीं। निसि[154] बिछुरहिं औ दिनहिं मिलाहीं।।

कुरलहिं[155] सारस भरे हुलासा[156]। जिअन हमार मुअहिं एक पासा।।

---

124. सुंदर 125. कमल 126. भँवरे 127. घूमते हैं 128. कमर 129. मृग 130. बोली 131. चलते हुए 132. अच्छा लगना 133. मेघवाला 134. पैर 135. दांत की पंक्ति 136. बिजली 137. दीप्त होना 138. प्रसन्नता 139. कौतुक 140. देखती हैं 141. आँख 142. बक्र, टेढ़ा 143. मारना 144. काम की मूर्ति (मैन मुरति) 145. अप्सरा 146. पोखर 147. तलैया 148. कमल 149. उगना 150. मछली 151. सफेद 152. पीला 153. लाल 154. रात 155. बोलते हुए 156. उल्लास से

केंवा[157] सोन ढेक बग लेदी। रहे अपूरि[158] मीन जल भेदी।।

नग अमोल[159] तेन्ह तालन्ह दिनहिं[160] बरहिं[161] जनु दीप।

जो मरजिआ[162] होइ तहँ सो पावइ वह सीप।।9।।

पुनि जो लाग बहु अंब्रित वारी[163]। फरीं अनूप होइ रखवारी।।

नवरँग नीबू सुरँग[164] जँमीरा[165]। औ बादाम बद अंजीरा।।

गलगल[166] तुरँज[167] सदाफर[168] फरे। नारँग अति राते रस भरे।।

किसमिस सेब फरे नौ[169] पाता। दारिवँ [170] दाख देखि मन राता।।

लागि सोहाई हरपारेउरी[171]। ओनइ[172] रही केरन्ह की घंउरी।।

फरै तूत कमरख औ निउँजी[173]। राय करौंदा बैरि चिरउँजी।।

संखदराउ[174] छोहारा डीठे। औरु खजहजा[175] खाटे मीठे।।

पानी देहिं खँडवानी[176] कुअँहि खाँड बहु मेलि[177]।

लागीं घरी रहट की सींचहिं अंब्रित बेलि।।10।।

---

157. एक जलपक्षी 158. भरपूर 159. अमूल्य 160. दिन में 161. जलते हैं 162. गोताखोर 163. बगीचा 164. सुंदर रंग का 165. जम्मीरी नीबू 166. एक प्रकार का नीबू 167. चकोतरा 168. शरीफा 169. नया, नए 170. अनार 171. आँवले के समान एक छोटा फल 172. झुक जाना 173. लीची 174. एक प्रकार का खट्टा फल 175. मेवा 176. शरबत 177. मिलाकर

सूरदास

विनय के पद

जापर[1] दीनानाथ[2] ढरै[3]।

सोइ कुलीन[4], बड़ौ सुंदर सोइ[5], जिहिं पर कृपा करै।

कौन बिभीषन रंक[6] निसाचर[7], हरि हँसि छत्र[8] धरै।

राजा कौन बड़ौ रावन तैं, गर्बहिं-गर्व गरै[9]।

रंकव कौन सुदामाहूँ तैं, आप समान करै।

अधम[10] कौन है अजामील तैं, जम[11] तहँ जात डरै।

कौन बिरक्त[12] अधिक नारद तैं, निसि दिन भ्रमत फिरै।

जोगी कौन बड़ौ संकर तैं, ताकौं काम[13] छरै[14]।

अधिक कुरूप कौन कुबिजा तैं, हरि पति पाइ तरै[15]।

अधिक सुरूप[16] कौन सीता तैं, जनम बियोग भरै।

यह गति[17] मति[18] जानै नहिं कोऊ किहिं रस रसिक[19] ढरै।

सूरदास भगवत-भजन बिनु फिरि फिरि जठर[20] जरै[21]।।1।।

---

1. जिस पर 2. दीन-दुखियों के स्वामी 3. कृपा करते हैं 4. श्रेष्ठ कुल वाला 5. अच्छा लगता है 6. विपन्न 7. राक्षस 8. राजछत्र 9. नष्ट हो जाना 10. पापी 11. यमराज 12. वैरागी 13. कामदेव 14. छलना 15. तर जाना 16. सुंदर 17. दशा, अवस्था 18. बुद्धि 19. श्री कृष्ण 20. उदर 21. ताप को सहना पड़ता है

अब कैं राखि लेहु भगवान।

हौं अनाथ बैग्यो[22] द्रुम-डरिया[23], पारधि[24] साधे बान।

ताकैं डर मैं भाज्यौ चाहत, ऊपर ढुक्यौ[25] सचान[26]।

दुहूँ भांति दुख भयौ आनि यह, कौन उबारै प्रान?

सुमिरत ही अहि[27] डस्यौ पारधी, कर[28] छूट्यौ संधान[29]।

सूरदास सर लग्यौ सचानहिं, जय-जय कृपानिधान।।2।।

बाललीला

किलकत[30] कान्ह घुटुरुवनि[31] आवत।
मनिमय [32] कनक नंद कैं आँगन, बिंव[33] पकरिबैं धावत।
कबहुं निरखि[34] हरि आपु छाँह[35] कौं, कर सौ पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत[36] द्वै दतियाँ [37], पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत[38]।
कनक-भूमि[39] पर कर-पग-छाया, यह उपमा इक राजति[40]।
करि-करि प्रतिपद[41] प्रतिमनि[42] बसुधा[43], कमल बैठकी[44] साजति[45]।
बाल-दसा-सुख निरखि[46] जसोदा, पुनि-पुनि नंद बुलावति।
अँचरा[47] तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौं दूध पियावति।।1।।

चलत देखि जसुमति[48] सुख पावै।

---

22. बैठना 23. वृक्ष की डाल 24. शिकारी, बधिक 25. घुसा हुआ, मौजूद 26. बाज 27. साँप 28. हाथ 29. धनुष पर चढ़ा बाण 30. किलकारी मारते हुए, प्रसन्न होकर 31. घुटनों के बल 32. मणियों से युक्त 33. परछाईं 34. देखकर 35. छाया 36. सुशोभित 37. दो दाँत 38. दुहराते हैं 39. स्वर्ण भूमि 40. उचित या सुंदर प्रतीत होती है 41. प्रत्येक पग 42. प्रत्येक मणि 43. धरती, पृथ्वी 44. आसन 45. सजा रही है 46. देखकर 47. आँचल 48. यशोदा

ठुमुकि-ठुमुकि[49] पग[50] धरनी[51] रेंगत, जननी[52] देखि दिखावै।
देहरि[53] लौं चलि जात, बहुरि[54] फिरि-फिरि इतहीं[55] कौं आवै।
गिरि-गिरि परत, बनत नहिं[56] नाँघत[57] सुर-मुनि सोच करावै।
कोटि[58] ब्रह्मंड करत छिन[59] भीतर, हरत[60] बिलंब[61] न लावै।
ताकौं लिए नंद की रानी, नाना खेल खिलावै।
तब जसुमति कर टेकि[62] स्याम कौ, क्रम-क्रम करि उतरावै।
सूरदास प्रभु देखि-देखि सुर-नर-मुनि-बुद्धि भुलावै।।2।।

गए स्याम तिहिं[63] ग्वालिनि कैं घर।
देख्यौ द्वार नहीं कोउ, इत[64] उत[65] चितै[66], चले तब भीतर।
हरि आवत गोपी जब जान्यौ, आपुन[67] रही छपाइ।
सूनैं सदन[68] मथनियाँ [69] कैं ढिग[70], बैठि रहे अरगाई[71]।
माखन भरी कमोरी[72] देखत, लै-लै लागे खान।
चितै रहे मनि-खंभ-छाहँ [73] -तन, तासौं करत सयान[74]।
प्रथम आजु मैं चोरी आयौ, भलौ बन्यौ है संग।
आपु[75] खात, प्रतिबिंब खवावत[76], गिरत कहत, का रंग?
जौ चाहौ सब देउँ कमोरी, अति मीठौ कत डारत[77]।
तुमहिं देति मैं अति सुख पायौ, तुम जिय [78] कहा बिचारत?
सुनि-सुनि बात स्याम के मुख की, उमंगि[79] हँसी ब्रजनारी।
सूरदास प्रभु निरखि[80] ग्वालि-मुख तब भजि चले मुरारी।।3।।

---

49. पैर पटकते हुए चलना 50. पैर 51. धरती 52. माता 53. दहलीज 54. फिर से 55. वहीं 56. सफल नहीं होना 57. लाँघना 58. करोड़ 59. क्षण 60. नाश करना 61. देर 62. पकड़ना 63. उसी 64. इधर 65. उधर 66. देखना 67. अपने को 68. मकान, घर 69. मथानी 70. पास, समीप 71. चुप्पी साधकर 72. मटका 73. मणि के खंभे में तन की छाया 74. चतुर 75. खुद 76. खिलाना 77. डालना 78. मन, हृदय 79. अपार, खूब 80. देखकर

मैया बहुत बुरो बलदाऊ[81]।
कहन लग्यौ बन बड़ो तमासौ[82], सब मौड़ा[83] मिलि आऊ।
मोहूँ कौं चुचकारि[84] गयौ लै, जहाँ सघन बन झाऊ[85]।
भागि चलौ, कहि, गयौ उहाँ तैं, काटि खाइ रे हाऊ[86]।
हौं डरपौं, काँपौं अरु रोवौं, कोउ नहिं धीर धराऊ।
थरसि[87] गयौ नहिं भागि सकौं, वै भागे जात अगाऊ[88]।
मोसौं कहत मोल कौ लीनो, आपु कहावत साऊ[89]।
सूरदास बल[90] बड़ौ चवाई[91], तैसेहिं मिले सखाऊ।।4।।

भ्रमरगीत

मधुकर[92] हमहीं क्यौं समुझावत।
बारंबार ज्ञान गीता कौ, अबलनि[93] आगैं गावत।।
नंद नंदन बिनु कपट[94] कथा कत[95], कहि कहि रुचि उपजावत[96]।
एक चंदन जो अंग छुधा[97] रत, कहि कैसैं सचु पावत।।
देखि बिचारि तुहीं जिय अपने, नागर[98] है जु कहावत।
सब सुमननि[99] फिरि फिरि जु निरस करि, काहैं कमल बँधावत।।
चरन कमल, कर नयन बदन छबि, वहै कमल मन भावत[100]।
सूरदास मन अलि[101] अनुरागी कहि कैसैं सुख पावत।।1।।

मधुकर कहाँ पढ़ी यह नीति[102]।
लोक वेद सब ग्रंथ रहित यह, कथा कहत बिपरीति[103]।।

---

81. बलराम जी 82. तमाशा 83. बालक 84. पुकार कर 85. एक प्रकार का झाड़ 86. हौवा (डराने वाला, जिसका अस्तित्व न हो) 87. भयभीत 88. आगे 89. सज्जन 90. बलराम 91. चुगली करने वाला, झूठा 92. भ्रमर, भँवरा 93. अबलाओं (अनाथ नारियाँ) 94. छल 95. कहाँ 96. उत्पन्न करना 97. भूख 98. चतुर, आभिजात्य 99. फूलों पर से 100. अच्छा लगना 101. भँवरा 102. व्यवहार का तरीका 103. उल्टी

जनम भूमि ब्रज सखी राधिका, केहिं अपराध तजी।
अति कुलीन गुन रूप अमित सुख, दासी जाइ भजी।।
जोग समाधि[104] बेद-गुनि मारग, क्यौं समुझै जु गँवारि।
जो पै[105] गुन अतीत व्यापक है, तौ हम काहैं न्यारि[106]।।
रहि अलि ढीठ[107] कपट स्वारथ हित, तजि बहु बचन बिसेषि।
मन क्रम बचन बचतिं[108] इहिं नातैं, सूर स्याम तन देखि।।2।।

अखियाँ हरि दरसन की प्यासी।
देख्यौ चाहतिं कमलनैन[109] कौं, निसि[110] दिन रहतिं उदासी।।
आए ऊधौ फिरि गए आँगन, डारि गए गर[111] फाँसी।
केसरि तिलक मोतिनि की माला, बृंदावन के बासी।।
काहू के मन की कोउ[112] जानत, लोगनि के मन हाँसी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, करवत लैहौं[113] कासी।।3।।

इहिं[114] उर[115] माखन चोर गड़े[116]।
अब कैसैं निकसत[117] सुनि ऊधौ, तिरछे ह्वै[118] जु अड़े।।
जदपि अहीर जसोदा नंदन, कैसैं जात छंड़े[119]।
ह्वां जादौपति प्रभु कहियत हैं, हमैं न लगत बड़े।।
को बसुदेव देवकी नंदन, को जानै को बूझै[120]।
सूर नंदनंदन के देखत, और न कोऊ सूझै।।4।।

ऊधौ तुम हौ चतुर[121] सुजान[122]।
हमकौं तुम सोई सिख[123] दीजौ, नंद सुवन[124] की आन[125]।।
आमिष[126] है भोजन हित जाकौ, सो क्यौं सागहिं मान।

---

104. प्रभु के ध्यान में मग्न हो जाना 105. वह, वे 106. अलग 107. धृष्ट 108. बोलना 109. कमल के समान आँख वाले अर्थात श्रीकृष्ण 110. रात्रि 111. गला 112. कौन 113. प्राण छोड़ना, काशी में लोग मरने के लिए जाते थे (करवत लैहों) 114. इस 115. हृदय 116. अंदर तक प्रवेश कर गए हैं 117. निकल नहीं पाना 118. होकर 119. छोड़े 120 समझें 121. चालाक 122. ज्ञानी 123. बुद्धि, युक्ति, तरीका 124. सुत, पुत्र 125. लाना 126. मांस

ता मुख सेम पात क्यौं परसत, जा मुख खाए पान।।
किंगरी[127] स्वर कैसैं सचु मानत, सुनि मुरली की तान।
सुख तौ ता दिन होइ सूर ब्रज, जा दिन आवै कान्ह।।5।।

ऊधौ कहा कहत बिपरीत।
जुवतिनि[128] जोग सिखावन आए, यह तौ उलटी रीति[129]।।
जोतत धेनु[130] दुहत पय[131] वृष[132] कौ, करन लगे जु अनीति[133]।
चक्रवाक[134] ससि[135] कौं क्यौं जानै, रबि[136] चकोर कहँ प्रीति।।
पाहन[137] तरै[138] सोलह[139] जौ बूड़े[140], तौ हम मानैं नीति।
सूर स्याम प्रति अंग माधुरी[141], रही गोपिका जीति।।6।।

काहे कौं रोकत मारग सूधौ[142]।
सुनहु मधुप[143] निरगुन कंटक[144] तैं, राजपंथ[145] क्यौं रूंधौ[146]।।
कै तुम सिखि[147] पठए [148] हौ कुबिजा, कह्यौ स्याम घनहूँ धौ[149]।
बेद पुरान सुमृति[150] सब ढूँढ़ौ, जुवतिनि[151] जोग कहूँ धौं[152]।।
ताकौ कहा परेखौ[153] कीजै, जानै छाँछ न दूधौ।
सूर मूर[154] अक्रूर गयौ लै, ब्याज निवेरत[155] ऊधौ।।7।।

---

127. जोगियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली छोटी सारंगी 128. युवतियों को 129. व्यवहार, तरीका 130. गाय 131. दूध 132. बैल 133. नीति के विरूद्ध 134. चकवा-चकवी 135. चंद्रमा 136. सूर्य 137. पाषाण, पत्थर 138. तैरने लगे 139. लकड़ी (एक झाड़ जो दलदली भूमि में उगत है।) 140. डूब जाए 141.सौंदर्य 142. सीधा 143. भँवरा (उद्धव) 144. कांटा 145. राजपथ 146. अवरूद्ध करना 147. सिखाकर 148. भेजना 149. संभवतः 150. स्मृति 151. युवतियों के लिए 152. संभवतः 153. विश्वास 154. मूलधन 155. वसूल करना

तुलसीदास

'कवितावली' के उत्तरकांड से

सो जननी[1], सो पिता, सोइ भाइ, सो भामिनि[2], सो सुतु[3], सो हितु[4] मेरो।
सोइ सगो, सो सखा, सोइ सेवकु, सो गुरु, सो सुरु[5], साहेबु[6] चेरो[7]।।
सो 'तुलसी' प्रिय प्रान समान, कहाँ लौं बनाइ[8] कहौं बहुतेरो[9]।
जो तजि[10] देहको, गेहको[11] नेहु[12], सनेहसों रामको होइ सबेरो[13]।।1।।

मातु-पिताँ जग[14] जाइ[15] तज्यो बिधिहूँ [16] न लिखी कछु भाल[17] भलाई।
नीच, निरादरभाजन[18], कादर[19], कूकर-टूकन[20] लागि ललाई[21]।।
रामु-सुभाउ सुन्यो तुलसीं प्रभुसों कह्यो बारक[22] पेटु खलाई[23]।
स्वारथको परमारथको रघुनाथु सो साहेबु, खोरि[24] न लाई।।2।।

जायो[25] कुल मंगन[26], बधावनो[27] बजायो, सुनि
भयो परितापु पापु जननी-जनकको[28]।
बारेतें[29] ललात-बिललात[30] द्वार-द्वार दीन,
जानत हो चारि फल[31] चारि ही चनकको[32]।।
तुलसी सो साहेब समर्थको सुसेवकु है,
सुनत सिहात[33] सोचु बिधिहू गनकको[34]।
नामु राम! रावरो[35] सयानो[36] किधौं बावरो[37],
जो करत गिरीतें[38] गरु[39] तृनतें[40] तनकको[41]।।3।।

---

1. माता 2. स्त्री, औरत 3. पुत्र 4. हितैषी 5. देवता 6. मालिक, स्वामी 7. नौकर 8. बनाकर 9. बहुत सारा, अधिक 10. त्यागना 11. घर को 12. ममता 13. जल्दी से 14. संसार 15. जन्म देने वाले 16. ब्रह्मा 17. किस्मत 18. निरादर के पात्र 19. कायर 20. कुत्ते की तरह टुकड़े के 21. ललचाना 22. एक बार 23. खाली करके 24. कमी 25. जन्म लेना 26. माँगने वाला 27. बधाई के बाजे 28. माता-पिता को 29. बचपन से 30. ललचाता-बिलबिलाता 31. चार फल (अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष) 32. चने को 33. ईर्ष्या करना 34. ज्योतिषी को 35. आपका 36. चतुर 37. बावला (मूर्ख) 38. पर्वत से 39. बड़ा 40. घास से 41. छोटे को, तुच्छ को

न मिटै भवसंकटु[42], दुर्घट[43] है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो[44]।
कलिमें न बिरागु, न ग्यानु कहूँ, सबु लागत फोकट[45] झूठ-जटो।।
नटु[46] ज्यों जनि पेट-कुपेटक[47] कोटिक चेटक[48]-कौतुक-ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुखु चाहिअ तौ, रसनाँ [49] निसिबासर[50] रामु रटो।।4।।

खेती न किसानको, भिखारीको न भीख, बलि[51],
बनिकको[52] बनिज[53], न चाकरको[54] चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान[55] सोच बस,
कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत[56],
साँकरे[57] सबै पै, राम! रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन[58] दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित-दहन[59] देखि तुलसी हहा करी।।5।।

धूत[60] कहौ, अवधूत[61] कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटीसों, बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको, जाको, रुचै सो[62] कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो, मसीतको[63] सोइबो, लैबोको एकु न दैबेको दोऊ।।6।।

ईसनके ईस[64], महाराजनके महाराज,
देवनके देव, देव! प्रानहुके प्रान हौ।
कालहूके काल, महाभूतनके महाभूत,
कर्महूके करम, निदानके निदान[65] हौ।।
निगमको[66] अगम[67], सुगम तुलसीहू-सेको

---

42. सांसारिक कष्ट 43. कठिन 44. घूमना, भटकना 45. सारहीन 46. नर्तक 47. पेटरूपी कुत्सित पिटारा 48. इंद्रजाल, जादू 49. जीभ 50. रात-दिन 51. बलि जाना 52. वैश्य को 53. व्यापार 54. मजदूर को 55. दुखी, संतप्त 56. देखा जाना 57. संकट में 58. दरिद्रता रूपी रावण 59. पाप की ज्वाला 60. धूर्त 61. औघड़ 62. जो अच्छा लगे 63. मस्जिद में 64. ईश्वर 65. कारण 66. वेद के लिए 67. अनजान

एते मान सीलसिंधु[68], करुनानिधान हौ।
महिमा अपार, काहू बोलको न वारापार[69],
बड़ी साहबीमें नाथ! बड़े सावधान हौ।।7।।

संकर-सहर[70] सर, नरनारि बारिचर[71]
बिकल[72], सकल, महामारी माजा[73] भई है।
उछरत[74] उतरात[75] हहरात[76] मरि जात,
भभरि भगात[77] जल-थल मीचुमई[78] है।।
देव न दयाल, महिपाल न कृपालचित,
बारानसीं बाढ़ति अनीति नित नई है।
पाहि[79] रघुराज! पाहि कपिराज[80] रामदूत!
रामहूकी बिगरी तुहीं सुधारि लई है।।8।।

'रामचरितमानस' के बालकांड से

रामकथा सुंदर कर तारी[81]। संसय बिहग[82] उड़ावनिहारी।।
रामकथा कलि बिटप[83] कुठारी[84]। सादर सुनु गिरिराजकुमारी[85]।।
राम नाम गुन चरित सुहाए [86]। जनम करम अगनित[87] श्रुति[88] गाए।।
जथा[89] अनंत राम भगवाना। तथा कथा करीति गुन नाना।।
तदपि जथा श्रुत[90] जसि मति[91] मोरी। कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी।।
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई। सुखद संतसंमत मोहि भाई[92]।।
एक बात नहिं मोहि सोहानी[93]। जदपि मोह बस कहेहु भवानी[94]।।
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना[95]। जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना।।

---

68. शील के सागर 69. ओर-छोर 70. शंकर का नगर अर्थात काशी 71. जलीय जीव 72. व्याकुल 73. जलीय जीवों को होने वाली एक प्रकार की बीमारी 74. उछलना 75. तैरना 76. भयभीत होना 77. भागना 78. मृत्युमय 79. रक्षा कीजिए 80. हनुमान जी 81. ताली 82. पक्षी 83. वृक्ष 84. कुल्हाड़ी 85. पर्वतों के राजा की पुत्री अर्थात पार्वती जी 86. अच्छा लगना 87. अनगिनत 88. वेद 89. जैसे 90. सुनना 91. बुद्धि 92. अच्छा लगना, भा जाना 93. अच्छा लगना 94. पार्वती जी 95. दूसरा

दो. कहहिं सुनहिं अस[96] अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच[97]।
पाषंडी हरि पद बिमुख जानहिं झूठ न साच ।।1।।

अग्य [98] अकोबिद[99] अंध अभागी। काई बिषय [100] मुकुर[101] मन लागी।।
लंपट[102] कपटी[103] कुटिल बिसेषी। सपनेहुँ संतसभा नहिं देखी।।
कहहिं ते बेद असंमत[104] बानी। जिन्ह कें सूझ लाभु नहिं हानी।।
मुकुर मलिन[105] अरु नयन बिहीना। राम रूप देखहिं किमि दीना[106]।।
जिन्ह कें अगुन न सगुन बिबेका। जल्पहिं[107] कल्पित बचन अनेका।।
हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं। तिन्हहि कहत कछु अघटित[108] नाहीं।।
बातुल[109] भूत बिबस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन बिचारे।।
जिन्ह कृत महामोह मद[110] पाना। तिन्ह कर कहा करिअ नहिं काना।।

दो. अस निज हृदयँ बिचारि तजु संसय भजु राम पद।
सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम[111] रबि कर[112] बचन मम।।2।।

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा[113]। गावहिं मुनि पुरान बुध[114] बेदा।।
अगुन[115] अरूप[116] अलख[117] अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें। जलु हिम[118] उपल[119] बिलग[120] नहिं जैसें।।
जासु नाम भ्रम तिमिर[121] पतंगा। तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा।।
राम सच्चिदानंद दिनेसा[122]। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा[123]।।
सहज प्रकासरूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना[124]।।
हरष बिषाद ग्यान अग्याना। जीव धर्म अहमिति[125] अभिमाना।।
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस[126] पुराना।।

---

96. नीच 97. प्रेत 98. अज्ञानी 99. मूर्ख 100. भोग-विलास 101. दर्पण 102. व्यभिचारी 103. छली 104. विरूद्ध 105. गंदा 106. बेचारा 107. कथन, प्रलाप 108. असंभव 109. वात रोग 110. शराब 111. अँधेरा 112. किरण 113. अंतर 114. पंडित, ज्ञानी 115. निगुर्ण 116. निराकार 117. अव्यक्त 118. बर्फ 119. ओला 120. अलग, अंतर 121. अंधकार 122. सूर्य 123. तनिक भी 124. सवेरा, प्रातःकाल 125. गर्व, अविद्या 126. परमेश्वर, परमात्मा

दो॰ पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि[127] प्रगट परावर[128] नाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँ नायउ माथ।।3।।

निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी। प्रभु पर मोह धरहिं[129] जड़[130] प्रानी।।
जथा गगन घन[131] पटल[132] निहारी। झाँपेउ[133] भानु[134] कहहिं कुबिचारी।।
चितव[135] जो लोचन[136] अंगुलि लाएँ। प्रगट जुगल ससि[137] तेहि के भाएँ।।
उमा राम बिषइक अस मोहा। नभ तम धूम[138] धूरि[139] जिमि सोहा।।
बिषय करन सुर जीव समेता। सकल एक तें एक सचेता।।
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि[140] अवधपति सोई।।
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू।।
जासु सत्यता तें जड़ माया। भास[141] सत्य इव[142] मोह सहाया।।
दो॰ रजत[143] सीप महुँ भास जिमि जथा भानु कर बारि[144]।
जदपि मृषा[145] तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकइ कोउ टारि[146]।।4।।

एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई। जदपि असत्य देत दुख अहई[147]।।
जौं सपनें सिर काटै कोई। बिनु जागें न दूरि दुख होई।।
जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई।।
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा।।
बिनु पद[148] चलइ सुनइ बिनु काना। कर[149] बिनु करम करइ बिधि नाना।।
आनन[150] रहित सकल[151] रस भोगी। बिनु बानी[152] बकता[153] बड़ जोगी।।
तन बिनु परस[154] नयन बिनु देखा। ग्रहइ घ्रान[155] बिनु बास[156] असेषा[157]।।
असि सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिं बरनी।।

---

127. भंडार 128. सर्वश्रेष्ठ 129. आरोपण, आरोप करना 130. जिसमें चेतना न हो, अचेतन 131. बादल 132. पर्दा 133. ढकना 134. सूर्य 135. देखना 136. आँख 137. चंद्रमा 138. धुआँ 139. धूल 140. जो हमेशा से मौजूद हो 141. प्रतीत होना 142. समान 143. चाँदी 144. पानी 145. झूठ 146. हटाना 147. है 148. पैर 149. हाथ 150. मुख 151. सभी 152. आवाज 153. वक्ता 154. स्पर्श 155. सूँघना 156. सुगंध 157. सभी प्रकार का

दो॰ जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान।।5।।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

रहीम

एकै साधे[1] सब सधै[2], सब साधे सब जाय [3]।
रहिमन मूलहिं[4] सींचिबो, फूलै फलै अघाय [5]।।1।।

कहि रहीम धन बढ़ि घटे, जात धनिन[6] की बात।
घटै बढ़ै उनको कहा, घास बेंचि जे खात।।2।।

कहि रहीम संपति सगे[7], बनत बहुत बहु रीत[8]।
बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे[9] मीत[10]।।3।।

छिमा बड़न[11] को चाहिए, छोटेन को उतपात[12]।
का रहिमन हरि[13] को घट्यो, जो भृगु[14] मारी लात।।4।।

जे गरीब पर हित[15] करैं, ते रहीम बड़ लोग।
कहाँ सुदामा बापुरो[16], कृष्ण मिताई[17] जोग।।5।।

जो रहीम उत्तम[18] प्रकृति[19], का करि सकत कुसंग[20]।
चंदन विष[21] व्यापत[22] नहीं, लपटे रहत भुजंग[23]।।6।।

तरुवर[24] फल नहिं खात हैं, सरवर[25] पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान[26]।।7।।

प्रेम पंथ[27] ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत[28] नाहिं।
रहिमन मैन-तुरंग[29] चढ़ि, चलिबो पावक[30] माहिं।।8।।

---

1. कार्य को पूरा करने का प्रयास 2. पूरा हो जाता है 3. नष्ट हो जाना 4. जड़ को 5. पर्याप्त, प्रचुर 6. धनी लोग 7. अपने 8. विभिन्न प्रकार से (बहु रीत) 9. वास्तविक 10. मित्र 11. बड़े लोगों को 12. खुराफात, उपद्रव 13. विष्णु 14. भृगु ऋृषि 15. भलाई, प्रेम 16. बेचारा 17. मित्रता, दोस्ती 18. श्रेष्ठ 19. स्वभाव 20. गलत संगति 21. जहर 22. फैलना 23. साँप 24. वृक्ष 25. तालाब 26. सज्जन, समझदार 27. रास्ता 28. निर्वाह 29. मोम का घोड़ा 30. आग

रहिमन कबहुँ बड़ेन[31] के, नाहिं गर्व[32] को लेस[33]।
भार धरैं संसार को, तऊ कहावत सेस[34]।।9।।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु[35] न दीजिये डारि[36]।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।।10।।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय [37]।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ[38] परि जाय।।11।।

रहिमन निज मन की बिथा[39], मन ही राखो गोय [40]।
सुनि अठिलैहैं[41] लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।।12।।

रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै[42], मोती, मानुष, चून[43]।।13।।

रहिमन बिपदाहू[44] भली, जो थोरे[45] दिन होय।
हित[46] अनहित[47] या जगत में, जानि परत सब कोय।।14।।

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।15।।

---

31. बड़े लोग, ऐसे लोग जिनमें बड़प्पन है 32. घमंड 33. थोड़ा-सा भी 34. शेष (शेषनाग) 35. छोटा 36. उपेक्षा करना 37. अलग करना 38. अविश्वास, मनोमालिन्य 39. पीड़ा 40. छिपाकर 41. उपहास करना 42. बचना 43. आटा 44. विपत्ति 45. कुछ 46. अपने 47. पराए

मीरांबाई

मेरे तो गिरधर[1] गोपाल[2] दूसरो न कोई।।

माता छोड़ी पिता छोड़े छोड़े सगा सोई।

साधाँ[3] संग बैठ बैठ लोक लाज खोई।।

सन्त देख दौड़ि आई, जगत देख रोई।

प्रेम आँसू डार डार[4] अमर बेल[5] बोई।।

मारग[6] में तारण[7] मिले सन्त नाम दोई[8]।

सन्त सदा सीस[9] पर नाम हृदै[10] होई।।

अब तो बात फैल गई, जानै सब कोई।

दासि मीरा लाल गिरधर, होई सो होई।।1।।

हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय।।

सूली[11] ऊपर सेज हमारी, किस बिध[12] सोना होय।

गगन मंडल[13] पर सेज पिया की, किस बिध मिलना होय।।

घायल की गति घायल जानै, कि जिन लागी होय।

1. पर्वत (गोवर्धन) को धारण करने वाला अर्थात श्री कृष्ण 2. गौ पालने वाले, श्री कृष्ण 3. साधु 4. डालकर, सींच कर 5. एक लता जो फैलती चली जाती है 6. मार्ग, रास्ता 7. उद्धार करने वाला 8. दो 9. सर, माथा 10. हृदय 11. नोकदार वस्तु जिस पर चढ़ाकर मृत्युदंड दिया जाता है 12. विधि, तरीका, प्रकार 13. शून्य चक्र (निर्गुण भक्ति में ब्रह्म का स्थान)

जौहरी[14] की गति जौहरी जाने, कि जिन जौहरी होय।।

दरद की मारी बन बन डोलूँ वैद मिल्यो नहीं कोय।

मीरां की प्रभु पीर मिटै जब वैद सांवलया[15] होय।।2।।

साँप पिटारो[16] राणा भेज्यो

मीरां हाथ दियो जाय।

न्हाय[17] धोय जब देखन लागी

सालिगराम[18] गई पाय।।

जहर का प्याला राणा भेज्यो

अमरित दियो वणाय।

न्हाय धोय जल पीवण लागी

अमर हो गई जाय।।

सुल सेज राणा ने भेजी

दीजो मीरा सुवाय।

साँझ भई मीरा सोवण लागी

मानो फूल बिछाय।।

---

14. जवाहरात का व्यवसाय करने वाला, पारखी 15. साँवले शरीर वाले अर्थात श्री कृष्ण 16. बाँस की ढक्कनदार टोकरी 17. स्नान कर 18. शालिग्राम = एक प्रकार का पत्थर जिसे ईश्वर स्वरूप माना जाता है

'मीरां' के प्रभु सदा सहाई

राखो विघन[19] हटाय।

भक्ति भाव में मस्त डोलती

गिरधर पै बलि[20] जाय।।3।।

मैं अपने सैयाँ संग साँची[21]।

अब काहे की लाज सजनी, परगट[22] हो नाची।।

दिवस[23] भूख नहिं चैन होय कबहूँ नींद निसि[24] नासी[25]।

वेध[26] वार को पार हो गयो, ग्यान गुन गाँसी[27]।।

कुल कुटुंब[28] सब ही आन बैठे, जैसे मधुमासी[29]।

दासी मीरां लाल गिरधर, मिटी जग हाँसी।।4।।

श्री गिरधर आगे नाचूँगी।

नाच नाच पिव रसिक[30] रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी।

प्रेम प्रीत के बाँध घूँघरू, सुरत की कछनी[31] काछूँगी[32]।।

लोक लाज कुल की मरजादा, या मैं एक न राखूँगी।

पिया के पलंगा जा पौढूँगी[33], मीरां हरि रंग राचूँगी[34]।।5।।

---

19. कष्ट, बाधा 20. न्यौछावर 21. एकाकार 22. प्रकट, प्रत्यक्ष, सामने आकर 23. दिन 24. रात 25. नष्ट होना, मिट जाना 26. बेधना 27. गीत गाना 28. स्वजन, संबंधी 29. चैत का महीना, वसंत का समय 30. कृष्ण 31. वस्त्र 32. बनना 33. लेटना 34.रंग में रंग जाना (रंग राचूँगी)

होरी पिया बिन लागे खारी[35], सुनि री सखी मेरी प्यारी।।

सूनों गाँव देस सब सूनों, सूनी सेज अटारी[36]।

सूनी विरहन पिय बिन डोले, तज दई पीव पियारी।।

भई हूँ या दुःखकारी।।

देस विदेस संदेस न पहुँचै, होय अंदेसा[37] भारी।

गिणतां गिणतां घस गई रेखा, आँगुरियाँ की सारी।

अजहुँ नहिं आये मुरारी[38]।।

बाजत झांझ मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी।

आई बसंत कंत[39] घर नाहीं, तन में ज्वर[40] भया भारी।

श्याम मन कहा विचारी।।

अब तो मेहर[41] करो मुझ ऊपर, चित्त[42] दै सुणो हमारी।

मीरां के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की कुँवारी।

लगी दरसन की तारी[43]।।6।।

मेरे मन राम नाम बसी।

तेरे कारण स्याम सुन्दर, सकल[44] लोगाँ हँसी।।

---

35. फीकी, आनंद रहित 36. अट्टालिका, महल 37. आशंका, चिंता 38. श्रीकृष्ण 39. पति 40. ताप, बुखार 41. कृपा, दया 42. मन 43. प्यास 44. सभी

कोई कहै मीरा भई बावरी[45], कोई कहे कुल[46] नासी।

कोई कहै मीरा दीप आगरी[47] नाम पिया सूँ रसी[48]।।

खाण्ड[49] धार भक्ति की न्यारी, काटि है जम[50] फाँसी।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सबद[51] सरोवर धाँसी।।7।।

आओ सहेलियाँ रली[52] करो हे परघर[53] गवण[54] निवार[55]।।

झूठा माणिक मोतिया री झूठी जग मग जोत।

झूठा सब आभूषणाँ री साँची पिया जी री पोत[56]।।

झूठा पाट[57] पटंबरा[58] रे झूठा दिखणी चीर[59]।

साँची पियाजी री गूदड़ी[60] जा में निरमल रहे सरीर।।

छप्पन भोग बुहायदौ[61] हे इण भोगन में दागे।

लूण[62] अलूणों ही भलो हे अपणो पिया जी रो सागे।।

देखि बिराणे[63] निवाँण[64] कूँ हे क्यूँ उपजावै[65] खीज।

कालर[66] अपणो ही भली हे जामें निपजे[67] चीज।।

छैल[68] बिराणों लाख कोहे अपणे काज न होय।

---

45. पागल 46. वंश, घराना 47. आग 48. मिलन के संदर्भ में 49. तलवार 50. यमराज 51. शब्द, उपदेश 52. क्रीड़ा, खेल 53. दूसरे के घर 54. गमन 55. रोकना 56. माला 57. वस्त्र 58. रेशमी वस्त्र 59. कपड़ा, वस्त्र 60. चिथड़ा, जीर्ण वस्त्र 61. जल में बहा देना 62. नमक 63. पाराए 64. हरी-भरी जमीन 65. पैदा करना, उत्पन्न करना 66. खारी ऊसर भूमि 67. उपजना 68. बाँका, रंगीला पुरुष, रसिक व्यक्ति

ता के संग सिधारताँ[69] हे भला न कहसी कोय।।

वर हीणो[70] अपणो भलो हे कोढ़ी कुष्टी होय।

जा के संग सिधारताँ है भला कहै सब कोय।।

अविनासी[71] सूँ बालबाँ[72] जिन सूँ साँची प्रीत।

मीरा कूँ प्रभु जी मिल्या एही भक्ति की रीत।।8।।

जो तुम तोड़ो, पिया मैं नहीं तोडूँ।

तोसों प्रीत तोड़ कृष्ण! कौन संग जोडूँ।।

तुम भये तरुवर[73] मैं भई पँखिया[74]।

तुम भये सरोवर मैं तेरी मछिया[75]।।

तुम भये गिरिवर मैं भई चारा[76]।

तुम भये चंदा[77] मैं भई चकोरा[78]।।

तुम भये मोती, प्रभु हम भये धागा।

तुम भये सोना, हम भये सोहागा।

मीरा कहे प्रभु व्रज के वासी।

तुम मेरे ठाकुर[79] मैं तेरी दासी।।9।।

---

69. गमन, आना-जाना 70. हीन, साधारण 71. जिसका नाश न हो, ईश्वर 72. बालम, पति 73. वृक्ष 74. पक्षी 75. मछली 76. घास 77. चंद्रमा 78. चकोर पक्षी 79. मालिक, भगवान

मैंने नाम रतन[80] धन पायौ।

बसत[81] अमोलक[82] दी मेरे सतगुरु करि किरपा अपणायो।।

जनम जनम की पूँजी पाई जग मैं सवै खोवायो[83]।

खरचै नहिं कोई चोर न ले वे दिन-दिन बढ़त सवायो।।

सत की नाँव खेवटिया[84] सतगुरु भवसागर[85] तरि आयो।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर हरखि[86] हरखि जस[87] गायो।।10।।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

80. रत्न 81. वस्तु 82. अनमोल, जिसका कोई मूल्य न हो 83. खो देना 84. खेने वाला 85. संसार रूपी सागर 86. हर्ष के साथ 87. यश

बिहारी

मोहन-मूरति[1] स्याम[2] की अति अदभुत[3] गति जोइ[4]।
बसतु सु चित-अंतर[5], तऊ प्रतिबिंबितु[6] जग होइ।।1।।

अधर[7] धरत हरि कैं, परत ओठ-डीठि[8]-पट[9]-जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी इंद्रधनुष-रँग होति।।2।।

तजि[10] तीरथ, हरि-राधिका-तन-दुति[11] करि अनुरागु[12]।
जिहिं[13] ब्रज-केलि-निकुंज-मग[14] पग पग होतु प्रयागु[15]।।3।।

या अनुरागी चित्त की गति[16] समुझै नहिं कोइ।
ज्यौं ज्यौं बुड़ै[17] स्याम[18] रँग, त्यौं त्यौं उज्जलु[19] होइ।।4।।

जसु[20] अपजसु[21] देखत नहीं देखत साँवल-गात[22]।
कहा करौं, लालच-भरे चपल[23] नैन[24] चलि जात।।5।।

सरस[25] सुमिल[26] चित-तुरँग[27] की करि करि अमित[28] उठान[29]।
गोइ निबाहैं[30] जीतियै खेलि प्रेम-चौगान[31]।।6।।

दृग[32] उरझत[33], टूटत कुटुम[34], जुरत[35] चतुर-चित प्रीति।
परति गाँठि दुरजन-हियैं[36]; दई, नई, यह रीति।।7।।

---

1. मन को मोहने वाली मूर्ति (मूर्ति का अर्थ प्रतिमा होता है पर यहाँ मूर्ति का तात्पर्य छवि या रूप से है।) 2. कृष्ण 3. अनोखा 4. जिसका 5. अंतःकरण के भीतर 6. प्रतिच्छाया, परछाई 7. नीचे का ओठ 8. दृष्टि 9. वस्त्र 10. त्यागकर, छोड़कर 11. कृष्ण और राधा के शरीर की आभा (कांति, चमक) से 12. प्रेम 13. जिससे, जिसके कारण 14. (क) केलि=क्रीड़ा (ख) निकुंज = घने वृक्षों और लताओं से घिरा स्थान (ग) मग = मार्ग 15. प्रयागु = प्रयाग (तीर्थराज) 16. चाल 17. डूबना 18. कृष्ण 19. निर्मल 20. यश 21. अपयश, बदनामी 22. श्याम वर्ण शरीर, कृष्ण 23. चंचल 24. आँख 25. रसीले 26. अनुरागी, मिलकर चलने वाला 27. चित्त रूपी घोड़ें 28. अनंत 29. उमंगे 30. छिपकर निभाना (गोई निबाहै) 31. चौगान = एक प्रकार का खेल 32. नयन, आँख 33. उलझना (एक-दूसरे से मिलना) 34. संबंधी 35. जुड़ जाना, मिलना, संबंद्ध हो जाना 36. दुर्जन के हृदय में

नहिं परागु[37], नहिं मधुर मधु[38], नहिं बिकासु इहिं काल।
अली[39], कली[40] ही सौं बँध्यो, आगैं कौन हवाल[41]।।8।।

बतरस-लालच[42] लाल[43] की मुरली धरी लुकाइ[44]।
सौंह[45] करैं भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ[46]।।9।।

जिन दिन देखे वे कुसुम[47], गई सु बीति बहार[48]।
अब, अलि, रही गुलाब मैं अपत,[49] कँटीली डार।।10।।

मेरी भव-बाधा[50] हरौ,[51] राधा नागरि[52] सोइ।
जा तन[53] की झाँईं[54] परैं स्यामु हरित-दुति[55] होइ।।11।।

कहत[56], नटत[57], रीझत[58], खिझत[59], मिलत[60], खिलत[61], लजियात।
भरे भौन[62] मैं करत हैं, नैननु हीं सब बात।।12।।

कनकु[63] कनक[64] तैं सौगुनौ मादकता[65] अधिकाइ।
उहिं[66] खाऐं बौराइ[67], इहिं पाऐं हीं बौराइ।।13।।

संगति-दोषु लगै सबनु[68], कहे ति साँचे बैन[69]।
कुटिल-बंक-भ्रुव-सँग[70] भए कुटिल, बंक-गति-नैन[71]।।14।।

कहलाने[72] एकत[73] बसत[74] अहि[75] मयूर, मृग बाघ।
जगतु तपोबन[76] सौ कियौ दीरघ-दाघ[77] निदाघ[78]।।15।।

---

37. पराग (यहाँ यौवन का प्रतीक) 38. शहद (यहाँ सरसता का प्रतीक) 39. भौंरा 40. पुष्प के खिलने से पूर्व की अवस्था 41. दशा 42. बातचीत के आनंद का लालच 43. कृष्ण 44. छिपाकर 45. शपथ, सौगंध 46. मुकर जाना, इंकार करना (नटि जाइ) 47. पुष्प (अच्छे दिन का प्रतीक) 48. वसंत 49. पत्रहीन, बिना पते के 50. सांसारिक कष्ट 51. हर लो, मिटा दो 52. नगर में रहने वाली, चतुर 53. शरीर 54. परछाईं, आभा 55. हरा-भरा अर्थात प्रसन्न 56. कहना, बात करना 57. इंकार करना 58. अनुरक्त होना, मुग्ध होना 59. चिढ़ना 60. मेल करना 61. खिल जाना, प्रसन्न होना 62. भवन 63. सोना 64. धतूरा 65. नशा 66. उसको 67. उन्माद छा जाना 68. सबको 69. वचन 70. कपटी-टेढ़े भौं के साथ 71. आखों की टेढ़ी गति 72. व्याकुल होकर, कातर होकर 73. एकत्र, एक साथ 74. रहते हैं 75. सर्प 76. तपस्वियों का वन (जहाँ तप के प्रभाव के कारण जीव जंतु आपसी द्वेष भूल जाते हैं।) 77. प्रचंड गर्मी वाली 78. गृष्म

घनानंद

घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ, जिहि भांतिन[1] हौं दुख-सूल[2] सहौं[3]।
नहिं आवनि[4] औधि[5] न रावरी[6] आस[7], इतै[8] पर एक सी बाट[9] चहौं।
यह देखि अकारन मेरी दसा, कोउ वूझै[10] तो ऊतर कौन कहौं।
जिय[11] नेकु विचारि के देहु बताय, हहा पिय दूरि ते पांय[12] गहौं[13]।।1।।

प्यारे सुजान को प्रान-पियारो बस्यौ[14] जब कान संदेसो सुहायौ[15]।
कोटि सुधा[16] हू के सार[17] कों सोधि[18] कै पान[19] किये तें महासुख पायौ।
जीव-जियावन ताप-सिरावन[20] है, रसमैं घनआनन्द छायौ।
ये गुनि क्यौं न रचै सजनी उनि[21] रंग-रचे अधरानि[22] रचायौ।।2।।

हीन[23] भएं जल मीन[24] अधीन[25], कहा कछु मो अकुलानि[26] समानै।
नीरसनेही[27] कों लाय कलंक[28] निरास ह्वै[29] कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यों समुझै जड़[30], मीत[31] के पानि परै कों प्रमानै[32]।
या मन की जु[33] दसा, घनआनंद जीव की जीवनि[34] जान[35] ही जानै।।3।।

सावन आवन हेरि सखी, मनभावन[36]-आवन-चोप[37] बिसेखी[38]।
छाए कहूं घनआनंद[39] जान[40] सम्हारि[41] की ठौर[42] लै भूलनि[43] लेखी।
बूँदे लगै सब अंग दगैं[44] उलटी गति आपने पापनि पेखी[45]।
पौन[46] सों जागति[47] आगि सुनी ही पै पानि तें लागति आंखिन देखी।।4।।

---

1. प्रकार, तरीका 2. दुख के काँटे 3. सहना 4. आना 5. अवधि, समय 6. आपकी 7. आशा, उम्मीद 8. इतने 9. रास्ता 10. पूछे 11. मन में 12. पाँव 13. पकड़ना 14. बसना, रहना 15. अच्छा लगना, सुंदर लगना 16. अमृत 17. सारतत्व 18. साफ करके, निकालकर 19. पीना 20. ताप को मिटाने वाला 21. उनके 22. अधर से, ओठ से 23. अलग होना, छिछला, कमतर 24. मछली 25. विवश 26. तड़प, बेचैनी 27. पानी रूपी प्रेमी 28. दाग 29. होना 30. अचेतन, ज्ञान से शून्य, मंदबुद्धि, निष्ठुर 31. प्रेमी, साथी 32. प्रमाणित करता है 33. जैसी 34. प्राणों का प्राण (जीव की जीवनि) 35. प्रिय (सुजान) 36. मन को भाने वाले, प्रियतम 37. अभिलाषा, उत्साह 38. विशेष 39. आनंद के बादल 40. जान कर 41. सँभालना 42. स्थान 43. भूल 44. जलना 45. देखना, देख रही हूँ 46. पवन, हवा 47. तेज होना

उर-भौन[48] में मौन को घूंघट कै दुरि वैठी विराजति[49] बात बनी[50]।
मृदु[51] मंजु[52] पदारथ-भूषन[53] सों सु लसै[54] हुलसैं[55] रस-रूप मनी।
रसना[56] अली[57] कान-गली[58] मधि ह्वै पधरावति[59] है चित-सेज[60] ठनी।
घनआनंद बूझनि[61]-अंक बसै विलसैं[62] रिझवार[63] सुजान धनी।।5।।

इक तौ जग मांझ[64] सनेही[65] कहां, पै कहूं जो मिलाप की बास[66] खिलैं।
तिहि देखि सकै न बड़ो बिधि[67] कूर, वियोग-समाजहि[68] साजि मिलै।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ, न मिलौ तौ कहौ मन काहि मिलै।
अमिले[69] रहिबो लै मिले तें कहा, यदि पीर मिलाप में धीर[70] गिलै[71]।।6।।

मीत[72] सुजान अनीत[73] करौ जिन[74], हाहा न हूजियै[75] मोहि[76] अमोही[77]।
डीठि[78] कौ और कहूँ नहि ठौर[79] फिरी दृग[80] रावरे[81] रूप की दोही[82]।
एक बिसास[83] की टेक[84] गहे लगि आस रहे बसि प्रान-बटोही[85]।
हौ घनआनँद जीवनमूल[86] दई कित प्यासनि मारत मोही।।7।।

पहिलें[87] घन-आनंद सींचि सुजान[88] कहीं बतियाँ अति प्यार पगी[89]।
अब लाय[90] बियोग की लाय[91] बलाय[92] बढ़ाय, बिसास दगानि[93] दगी[94]।
अँखियाँ दुखियानि कुबानि[95] परी न कहुँ लगैं; कौन घरी सुलगी।
मति[96] दौरि थकी, न लहै ठिकठौर, अमोही के मोह मिठामठगी[97]।।8।।

तब तो छबि[98] पीवत जीवत है, अब सोचन लोचन[99] जात जरे।

---

48. हृदय रूपी भवन 49. उपस्थित होना, शोभा पाना 50. बात रूपी वधू (बात बनी) 51. कोमल 52. आकर्षक 53. गहना, जेवर 54. शोभा पाना 55. उल्लास 56. वाणी 57. सखी 58. कान रूपी गली 59. ले आना, ले आती है 60. चित्त रूपी शय्या 61. योग्यता, समझदारी 62. सुशोभित होना 63. रीझने वाला, मुग्ध होने वाला 64. मध्य, भीतर 65. प्रेमी 66. सुगंध 67. विधाता 68. वियोग के समाज, वियोग की सेना 69. बिना मिले ही रहना 70. धैर्य 71. मन ही में रखना, प्रकट नहीं होने देना 72. मित्र 73. अनीति, अन्याय 74. नहीं, मत 75. होना, हों 76. मोहित करके 77. निष्ठुर, निर्मोही 78. दृष्टि, नेत्र 79. स्थान 80. नेत्र 81. आपके 82. दुहाई 83. विश्वास 84. सहारा 85. पथिक-प्राण 86. प्राण तत्व, जल भंडार 87. पहले, संयोग के दिनों में 88. चतुर 89. भीगी 90. लाकर 91. आग 92. बला, विपत्ति 93. धोखा, दवाग्नि 94. जलाई 95. बुरी आदत 96. बुद्धि 97. मिठास से ठगी गई 98. सौंदर्य, रूप 99. आँख

हित[100] पौष[101] के तोष[102] सु प्रान पले, बिललात[103] महा दुख दोष भरे।
घनआनँद मीत सुजान बिना सब ही सुख साज-समाज टरे[104]।
तब हार[105] पहार से लागत हे अब आनि कै[106] बीच पहार परे।।9।।

अति सूधो[107] सनेह को मारग है जहाँ नेकु[108] सयानप[109] बाँक[110] नहीं।
तहाँ साँचे चलें तजि आपनपौ[111] झझकैं[112] कपटी[113] जे निसाँक[114] नहीं।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरी आँक[115] नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े[116] हौ कहौ मन[117] लेहु पै देहु छटाँक[118] नहीं।।10।।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

100. प्रेम 101. पोषण 102. संतुष्टि 103. व्याकुल होना 104. नष्ट हो गए 105. माला 106. आकर (आनि कै) 107. सरल, सीधा 108. तनिक भी 109. चतुराई 110. टेढ़ा 111. अपने आपको, अहंकार 112. झिझकना, हिचकना 113. धोखेबाज, छली 114. बिना शंका के 115. अंक 116. पट्टी पढ़ना, शिक्षा प्राप्त करना (पाटी पढ़े) 117. चालीस सेर हृदय 118. सेर का सोलहवाँ भाग

रसखान

सवैया

मानुष हों[1] तौ वहीं रसखानि बसौं[2] ब्रज गोकुल गाँवन के ग्वारन[3]।
जो पसु[4] हौं तो कहा बसु मेरो चरौं[5] नित नन्द की धेनु[6] मँझारन[7]।
पाहन[8] हौं तो वही गिरि[9] को जो धर्‌यौ[10] कर छत्र पुरन्दर[11] धारन[12]।
जो खग[13] हौं बसेरो करौं मिल कालिन्दी[14]-कूल-कदम्ब की डारन।।1।।

'बैन[15] वही उनको गुन गाइ औ कान वही उन बैन सों सानी[16]।
हाथ वही उन गात[17] सरै[18] अरु पाइ[19] वही जु वही अनुजानी[20]।
जान वही उन आन के संग औ मान वही जु करै मनमानी।
त्यौं रसखान[21] वही रसखानि[22] जु है रसखानि[23] सों है रसखानी[24]।।2।।

गावैं सुनि गनिका[25] गंधरब्ब[26] और सारद[27] सेष[28] सबै गुन गावत।
नाम अनंत गनंत[29] गनेस ज्यौं ब्रह्मा त्रिलोचन[30] पार न पावत।
जोगी जती[31] तपसी अरु सिद्ध निरन्तर जाहि समायि [32] लगावत।
ताहि अहीर की छोहरियाँ [33] छछिया[34] भरि छाछ पै नाच नचावत।।3।।

एक सु तीरथ डोलत है इक बार हजार पुराने बके[35] हैं।
एक लगे जप में तप में इक सिद्ध समाधिन में अटके[36] हैं।
चेत[37] जु देखत हौ रसखान सु मूढ़[38] महा सिगरे[39] भटके हैं।
साँचहि वे जिन आपुनपौ[40] यह स्याम गुपाल पै वारि[41] दके[42] हैं।।4।।

1. जब जब मनुष्य जन्म प्राप्त हो (मानुष हों) 2. बसना, रहना 3. ग्वाला 4. पशु 5. विचरना, घास आदि चरना 6. गाय 7. मझधार, नदी के बीच 8. पत्थर 9. पर्वत 10. रखना 11. इंद्र 12. अहंकार मिटाने के लिए 13. पक्षी 14. यमुना 15. आवाज, बोली 16. सने हुए, युक्त 17. शरीर, तन 18. माला पहनाना 19. पाँव 20. अनुगमन करना 21. कवि का नाम 22. रस की खान 23. कृष्ण 24. रस के भंडार 25. अप्सरा 26. गंधर्व 27. सरस्वती 28. शेषनाग 29. गिनना, सुमिरन करना 30. शंकर 31. यति 32. समाधि 33. लड़कियाँ 34. गोरस रखने का छोटा-सा पात्र 35. पाठ करना, सुनाना 36. फँसे हुए 37. चेत कर, ध्यान देकर 38. मूर्ख 39. सारे 40. स्वयं को 41. न्यौछावार 42. कर चुके हैं

मोर किरीट[43] नवीन लसै[44] मकराकृत[45] कुण्डल लोल[46] की डोरनि[47]।
ज्यों रसखान घने घन[48] में दमकै[49] बिबि[50] दामिनि[51] चाप[52] के छोरनि[53]।
मारि है जीव तो जीव बलाय बिलोक[54] बजाय लौंनन[55] की कोरनि।
कौन सुभाय [56] सौं आवत स्याम बजावत बैनु नचावत मौरनि।।5।।

कवित्त

संभु[57] धरै ध्यान जाको जपत जहान सब,
तातें न महान् और दूसर अवरेख्यौं[58] मैं।
कहै रसखान वही बालक सरूप धरै,
जाको कछु रूप रंग अद्भुत अवलेख्यौ मैं।
कहा कहूँ आली[59] कुछ कहती बनै न दसा[60],
नंद जी के अंगना में कौतुक एक देख्यौ मैं।
जगत को ठाटी[61] महापुरुष विराटी[62] जो,
निरंजन[63] निराटी[64] ताहि माटी[65] खात देख्यौ मैं।।1।।

वेई[66] ब्रह्म[67] ब्रह्मा जाहि सेवत[68] हैं रैन-दिन,
सदासिव सदा[69] ही धरत ध्यान गाढ़े[70] हैं।
वेई विष्नु जाके काज मानी[71] मूढ़ राजा रंक,
जोगी जती ह्वै कै सीत[72] सह्यौ अंग डाढ़े[73] हैं।
वेई ब्रजचंद[74] रसखानि प्रान प्रानन के,
जाके अभिलाख लाख-लाख भाँति बाढ़े हैं।
जसुधा[75] के आगे बसुधा[76] के मान-मोचन[77] से,

43. मुकुट 44. सुंदर लगते हैं, सुशोभित 45. मकर के आकृति की 46. चंचल 47. डोलना, हिलना 48. बादल 49. चमकना 50. दोनों 51. बिजली 52. धनुष (यहाँ पर इंद्रधनुष) 53. छोर 54. अवलोकन करना 55. लावण्य युक्त 56. सज–धज 57. शिव 58. देखना 59. सखी 60. अवस्था 61. आयोजन करने वाला, निर्मित करने वाले 62. विराट रूप दिखाने वाला 63. माया रहित 64. एकमात्र 65. मिट्टी 66. वही 67. ईश्वर 68. सेवा करना, अर्चना करना 69. हमेशा 70. गंभीर 71. अहंकारी 72. ठंड 73. जलाना (यहाँ शिथिल करना) 74. कृष्ण 75. यशोदा 76. पृथ्वी 77. अहंकार का नाश करना

तामरस-लोचन[78] खरोचन[79] कौ ठाढ़े[80] हैं।।2।।

कहा रसखानि सुख संपत्ति समार[81] कहा,
कहा तन जोगी ह्वै लगाए अंग छार[82] को।
कहा साधे पंचानल[83], कहा सोए बीच नल[84],
कहा जीति लाए राज सिंधु आर-पार को।
जप बार-बार तप संजम वयार-व्रत[85],
तीरथ हजार अरे बूझत लबार[86] को।
कीन्हौं नहीं प्यार नहीं सैयौ[87] दरबार, चित्त,
चाह्यौ न निहार्यौ जौ पै नंद के कुमार को।।3।।

दोहा

प्रेम प्रेम सब कोउ कहत, प्रेम न जानत कोइ।
जो जन जाने प्रेम तौ, परै जगत क्यौं रोइ।।1।।

कमल-तन्तु[88] सो छीद अरु, कठिन खड्ग[89] की धार।
अति सूधो टेढ़ो बहुरि, प्रेम-पंथ अनिवार[90]।।2।।

सास्त्रन पढ़ि पंडित भए, कै मौलवी कुरान।
जु पै प्रेम जान्यौ नहीं, कहा कियौ रसखान।।3।।

या छबि[91] पै रसखानि अब वारौं कोटि मनोज[92]।
जाकी उपमा कविन नहिं रहे सु खोज।।4।।

मन लीनो प्यारे चितै[93], पै छटाँक[94] नहिं देत।
यहै कहा पाटी[95] पढ़ी, दल[96] को पीछो लेत।।5।।

---

78. कमलनयन (कृष्ण) 79. खुरचनी 80. खड़े 81. गणना 82. भस्म, राख 83. पाँच अग्नि 84. जल 85. भूखा रहकर तप करना 86. मूर्ख 87. सेवन करना 88. कमल का रेशा 89. तलवार 90. अनिवार्य 91. सुंदरता 92. कामदेव 93. पर, किंतु 94. पाँच तोले की एक तौल 95. पाठ 96. फूल की पंखुड़ी, समूह, बराबर बँटे दो हिस्से

ए सजनी लोनो[97] लला, लखौ नंद के देह।
चितयौ[98] मृदु मुस्काइ कै, हरी सबे सुधि देह।।6।।

प्रेम अगम[99] अनुपम अमित[100], सागर सरिस[101] बखान।
जो आवत यदि ढिंग[102] बहुरि, जात नाहिं रसखान।।7।।

लोक वेद मरजाद सब, लाज काज सन्देह।
देत बहाए प्रेम करि, विधि निषेध को नेई[103]।।8।।

काम क्रोध मद[104] मोह भय, लोभ द्रोह[105] मात्सर्य[106]।
इन सबही तें प्रेम है, परे कहत मुनिवर्य।।9।।

आनन्द अनुभव होत नहिं, बिना प्रेम जग जान।
कै वह विषयानन्द[107] के, कै ब्रह्मानन्द[108] बखान।।10।।

97. लावण्य युक्त, आकर्षक 98. देखना 99. अगम्य 100. अपार 101. समान 102. पास 103. नेह, स्नेह 104. अहंकार 105. दुश्मनी 106. ईर्ष्या 107. लौकिक पदार्थों में आनंद 108 भगवद् विषयक आनंद

नजीर अकबराबादी

(1 से 4 'रोटिया' शीर्षक कविता से तथा 5 'चपाती' शीर्षक कविता से)

जिस जा[1] पे हांडी[2], चूल्हा तवा और तनूर[3] है।
खालिक[4] की कुदरतों[5] का उसी जा जहूर[6] है।।
चूल्हे के आगे आंच जो जलती हुजूर है।
जितने हैं नूर[7] सब में यही ख़ास नूर है।।
इस नूर के सबब[8] नज़र आती हैं रोटियां।।1।।

आवे तवे तनूर का जिस जा जुबां पे नाम।
या चक्की चूल्हे के जहां गुलज़ार[9] हो तमाम[10]।।
वां सर झुका के कीजे दंडवत[11] और सलाम।
इस वास्ते कि ख़ास यह रोटी के हैं मुकाम[12]।।
पहले इन्हीं मकानों में आती हैं रोटियां।।2।।

रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन[13] न हो।
मेले की सैर ख्वाहिषे[14] बागो चमन[15] न हो।।
भूके गरीब दिल की खुदा से लगन[16] न हो।
सच है कहा किसी ने कि भूके भजन न हो।।
अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियां।।3।।

कपड़े किसी के लाल हैं रोटी के वास्ते।
लंबे किसी के बाल हैं रोटी के वास्ते।।
बांधे कोई रुमाल हैं रोटी के वास्ते।।

1. स्थान, जगह 2. बटलोई की आकृति वाला मिट्टी का बरतन 3. तंदूर 4. सृष्टिकर्ता, ईश्वर 5. प्रकृति, सामर्थ्य 6. अभिव्यक्ति, प्रकाश 7. रोशनी, प्रकाश 8. कारण 9. उद्यान, वह स्थान जहाँ खूब चहल-पहल हो 10. सारा 11. साष्टांग प्रणाम 12. देर तक ठहराव 13. उपाय 14. इच्छा 15. उद्यान 16. प्रेम, धुन

सब कश्फ़[17] और कमाल हैं रोटी के वास्ते।।
जितने हैं रूप सब यह दिखाती हैं रोटियां।।4।।

पेट में रोटी पड़ी, जब तक तो यारो ख़ैर[18] है।
गर न हो फिर ग़ैर[19] का अपने ही जी से बैर है।।
खाते ही दो तर[20] निवाले[21] आसमां पर पैर है।
आसमां क्या, फिर तो ख़ासे[22], ला मका[23] की सैर है।।
दो चपाती के वरक[24] में, सब वरक रोशन हुए।।
एक रकाबी[25] में हमें, चौदह तबक[26] रोशन हुए।।5।।

17.जाहिर होना, प्रकट होना 18. खैरियत, कुशल 19. दूसरा, बेगाना 20. घी आदि से चुपड़ा हुआ 21. ग्रास, कौर 22. विशेष 23. अनंत, ईश्वर, अरब का प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानों का तीर्थस्थर है 24. पत्ता, पन्ना 25. एक प्रकार की छिछली छोटी थाली 26. चांदी सोने के पत्तरों का बेलकर या पीटकर कागज की तरह बनाया हुआ पतला वरक